www.thearyasamaj.org

Annual Subscription Rs. 100/- ओ३म् 27 th Nov 2013

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट की संपत्तियों से संबंधित

आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के गलत ऑर्डर पर

सुप्रिम कोर्ट ने रोक लगाई

गुरुकुल घटकेश्वर ट्रस्ट की भूमि को आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने अपने आदेश के द्वारा ट्रस्ट की भूमि घोषित करते हुए भी भूमि पर जिन लोगों ने कब्जा किया है, उसे नियमित करने का आदेश देते हुए सरकार को अधिकार दिया गया था। ट्रस्ट की भूमि की मालकियत ट्रस्टीज़ के आधीन होती है।

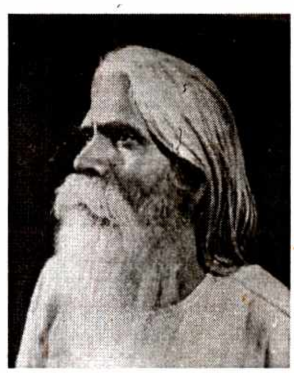

लेकिन हाईकोर्ट द्वारा मालिक कोई और उस जमीन को कब्जाये गए लोगों के नाम नियमित करने का अधिकार सरकार को देना सरासर ट्रस्ट के खिलाफ, ट्रस्ट की मालकियत के खिलाफ था। हालाँकि अपने ऑर्डर में हाईकोर्ट ने साफ शब्दो में ट्रस्ट की भूमि घोषित किया है। हाईकोर्ट के इस ऑर्डर को आय४ प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश ने उच्चतम न्यायालय में याचिका दायर कर चैलेंज किया था। सुप्रिम कोर्ट ने अपने १९ नवंबर २०१३ के फैसले में आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के ऑर्डर को गलत मानते हुए उस पर रोक लगा दी। यह ट्रस्ट की भूमि जो ६२७ एकड़ है, और शहर के बीचों बीच हाईटेक सिटी में है, जिसकी कीमत आज के मार्केट के हिसाब से १५ हज़ार करोड़ रुपये की संपत्ति है, जिसको सरकार के सरमायेदार भूकब्जेदार राजनीतिज्ञ और उनके साथी कई बिजनेस और कार्पोरेट घराने तथा फिल्मी हस्तियों के घराने शामिल हैं, जो कौड़ियों के दाम में सरकार से नियमित करवाना चाहते हैं। जब यह स्पष्ट हो गया कि यह भूमि ट्रस्ट की है, तो उसके अधिकार ट्रस्टियों के हाथ में या आंध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के हाथ में होना चाहिए। लेकिन आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट ने न्याय करते करते अधिकार ट्रस्टीज या सभा को देने के बजाए सरकार के हाथ में देकर सरासर अन्याय और गलत किया था। इसी को सुप्रिम कोर्ट में चुनौती दी गई थी। भारत के उच्चतम न्यायालय ने गुरुकुल के हक में सभा द्वारा दायर की गई याचिका पर सुनवाई के बाद हाईकोर्ट के गलत निर्णय पर रोक लगा दी है। यह एक ऐतिहासिक जीत है और पूरी तरह से ट्रस्ट की भूमि को हासिल करने के इस संघर्ष में एक कदम और आगे बढ़े हैं।

(सुप्रिम कोर्ट का ऑर्डर अगले पन्ने पर यथावत प्रकाशित किया गया है।

www.thearyasamaj.org

ITEM NO.33 COURT NO.10 SECTION XIIA

SUPREME COURT OF INDIA
RECORD OF PROCEEDINGS

I.A. NO.1 in &
Petition(s) for Special Leave to Appeal (Civil)....../2013
CC 19015/2013

(From the judgement and order dated 12/09/2012 in WP No.16658/2009, of
THE HIGH COURT OF A.P AT HYDERABAD)

ARYA PRATINIDHI SABHA **Petitioner(s)**

VERSUS

GOVT. OF A.P & ORS **Respondent(s)**

(With appln(s) for permission to file SLP and office report)
Date: 19/11/2013
This Petition and I.A. were called on for hearing today.

CORAM :
HON'BLE MR. JUSTICE CHANDRAMAULI KR. PRASAD
HON'BLE MR. JUSTICE KURIAN JOSEPH

For Petitioner(s) Mr. Rajesh Tyagi, Adv.
Mr. Atishi Dipankar,Adv. (Not Present)
For Respondent(s)
UPON hearing counsel the Court made the following

ORDER

I.A. No.1 of 2013 for permission to file the special leave petition is allowed.
Delay condoned.
Issue notice.
Till the next date of hearing, the direction contained in the impugned judgment shall remain stayed.

(Sanjay Kumar)
Court Master

(Suresh Kumar Varma)
Court Master

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : २२
दयानन्दाब्द : १९०
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०७०
नंदन नाम संवत् कार्तिक शुक्ल पक्ष
२७-११-२०१३

सम्पादक
विट्ठलराव आर्य

वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाष: 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्स: 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

संकल्प शक्ति का चमत्कार

प्रत्येक मानव के व्यक्तित्व और उसकी सफलता के पीछे मुख्य भाग उसकी संकल्प शक्ति का ही होता है। बिना संकल्प शक्ति के किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करना संभव नहीं है। केवल दृढ़ संकल्प शक्ति से एक-से-एक बढ़कर चमत्कार दिखलाये जाते हैं। संकल्प शक्ति ही मनुष्य के जीवन में उन्नति और अवनति का कारण होती है। उपनिषद की श्रृति के अनुसार, 'संकल्प मयो यं पुरुषः' अर्थात् मनुष्य संकल्प का ही बना हुआ है। भगवान मनु का कथन है।

संकल्प मूलः कामो वै यज्ञः संकल्पसम्भवः।

व्रतनियमधर्मास्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

अर्थात सब प्रकार की कामनाओं का मूल यह संकल्प है। यज्ञ संकल्प से उत्पन्न होता है व्रत-नियम-धर्म सब इसी संकल्प से उत्पन्न होने वाले माने गये हैं।

आज हमें जितने भी महापुरुष दिकाई पड़ते हैं, जिनका नाम संसार में आदर से लिया जाता है, उनके जीवन को उच्च और पवित्र बनाने का कारण संकल्प शक्ति ही है। यजुर्वेद के ३४वे अध्याय के छः मंत्रों में बार-बार यही प्रार्थना की गई है- 'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु' अर्थात मेरा यह मन पवित्र व शुभ संकल्पवाला हो, जैसे -

ओ३म् यज्ञाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दुरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पकस्तु।।१।।

जो दिव्य मन जाग्रत अवस्था में दूर निकल जाता है और इसी प्रकार सोने की दशा में भी वहुत दूर जाने वाला ज्योतियों की ज्योति अर्थात् इंद्रियों का प्रकाशक मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।

यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।२।।

कर्मशील, मनीषी, धीर पुरुष, जिसके द्वारा परोपकार क्षेत्र में तथा जीवन संघर्ष में बड़े - दो कार्य कर दिखाते हैं, जो समस्त प्रजाओं (इंद्रियों) के अंदर एक अपूर्व पूज्य सत्ता है, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

ओम यत् प्रज्ञानमुत् चेतो धृतिश्च यज्ञोतिरन्तरमृतं प्रजासु।

यस्मान्न ऋते किश्चन कर्मक्रियते। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।३।।

जो नये-दो अनुभव कराता है, जो समस्त इंद्रियों के अंदर एक अमर ज्योति है जिसके बिना कोई कर्म नहीं किया जा सकता, वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिग्रहीतममृतेन सर्वम्।

येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।४।।

जिस अमृत मन के द्वारा यह भूत-भविष्यतं तथा बर्तमान जाना जाता है। वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।

यस्मिँश्चितँसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।५।।

जिसमें ऋचाएँ, साम, यजु इस प्रकार टिके हुए हैं, जैसे रथ की नाभि में अरे, जिसमें इंद्रियों की सारी प्रवृत्ति पिरोयी रहती है। वह मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो।

ओ३म् सुषारथिरश्वामिनिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्वाजिनइव।

हृत्प्रतिष्ठिं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।६।।

अच्छा सारथी जिस प्रकार वेगवान घोडों को वागों से पकड़कर चलाता है, उसी प्रकार जो जो मनुष्यों को लगातार चलाता रहता है, जो हृदय में रहने वाला है, वो मेरा मन शुभसंकल्पों वाला हो।

प्रबन्ध कर्मसंकल्प द्वारा ही क्रियमान होते हैं। जैसे कहा जाता है - 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' इसलिए मनुष्य यदि अपने संकल्पों को विशुद्ध रखें और जब वह मलीन व अपवित्र होने लगे, तब यह जानकर कि मुझ पर कोई

विपत्ति आने वाली है, तत्काल अपने संकल्प और विचारों को शुद्ध और पवित्र बना लें, तो दुर्भाग्य उसे कभी भी भयभीत नहीं कर सकेगा। यदि पवित्र विचारों वाले मनुष्य पर अचानक कोई विपत्ति आ भी जाए, तो उस बोझ को दूसरे लोग सहायक बनकर बाँट लेते हैं अर्थात् उसके सहायक बन जाते हैं। इसके विपरीत बुरे व्यक्ति पर आये संकट में कोई सहायक नहीं बनता। अपितु उल्टे बढ़ाने वाले अनेकों हो जाते है। जो मनुष्य अपने जीवन में दुःखों को कम करने की इच्छा करता है, तो उसको चाहिए कि वह अपनी संकल्प शक्ति में वृद्धि करें और उसका सदुपयोग करना सीखें।

उगते हुए नये पौधे को उखाड़ना आसान है। किन्तु वह बड़ा वृक्ष बन जाने पर उसे जड़ से उखाड़ना मनष्य की शक्ति से बाहर हो जाता है। ठीक उसी प्रकार उत्पन्न होते हुए संकल्पों को उखाड़ना और उनके स्थान पर शुद्ध व पवित्र संकल्पों की रचना का निर्माण अत्यंत सुगम होता है। अतः जो व्यक्ति उठते हुए बुरे संकल्पों को उसी समय मिटा देता है, वह उससे संबंधित कर्म और उसके दुःख रूपी कर्मफल से बच जाता है। इसीलिए तो वेदमंत्रों में बार-बार दो प्रार्थना की गई है कि - मेरा मन पवित्र शुद्ध संकल्पवाला हो। संकल्प विद्या की शक्ति का पूरा-पूरा अनुभव करना अत्यंत कठिन है, क्यों कि संसार के प्रत्येक पदार्थ में यह शक्ति विद्यमान है। आजतक जितनी मानसिक शक्ति जैसे-मैस्मेरिज्म, हिप्नोटिज्म, टेलीपैथी, स्प्रिच्युअलिज्म आदि मनुष्यों को ज्ञात हुई है, उन सब में यही अलौकिक शक्ति काम करती है। जल में तरंगों की तरह शब्द की तरंगें भी दूर-दूर तक जाती हैं। आकाश के सूक्ष्म मण्डलों (ईथर) पर संकल्प की तरंगें दौड़ती हैं, काम करती हैं और दूर-दूर तक पहुँच जाती हैं। इथर की शक्ति, जो आकाश में विद्यमान है, हमारे मस्तिष्क में भी विद्यमान हैं। निरंतर विचार से उसमें गति उत्पन्न होती हैं और वे उसी प्रकार निकलती हैं, जैसे विद्युत की तरंगे निकलती हैं। जिन विचार तरंगों के साथ संकल्प शक्ति नहीं होती, वे शीघ्र नष्ट हो जाती हैं और जिन विचार तरंगों के साथ संकल्प शक्ति का बल होता है, वे रुकावटों और विरोदों के होतो हुए भी उस समय तक निरंतर दौड़ती रहती हैं,जब तक उसको अनुकूल विचारं वाला मन न मिल जाए, जो उस विचार के साथ सहानुभूति और अनुकूलता रखता हो।

यदि घृणा या शत्रुता के विचार इस संकल्प शक्ति की सहायता से किसी के लिए भेजेंगे, तो वे विचार जीवित शक्ति बन जाएंगे और वे जब तक निरंतर दौड़ते रहेंगे, जब तक कि उसके मन तक न पहुँच पाए। जिसके लिए भेजे गए थे, उसके अतिरिक्त वे अन्य बहुत से मनों के अंदर भी अपना प्रतिबिंब छोड़ जाते हैं। प्रेम का जो प्रत्येक विचार बाहर जाता है, अपने परिणाम में प्रेम की पूरी शक्ति लेकर उसी के पास वापस आ जाता है। इसीलिए यह कहावत कि - 'मन का मन साक्षी है।' क्योंकि आकाश में अनेक प्रकार के विचार चक्कर लगाते रहते हैं और जिस प्रकार के विचारों की मनुष्य में ग्रहण करने की प्रकृति होती है, उसी प्रकार के विचारों को आकाश से अपनी ओर खींच लेता है। जैसे जितनी तरह के वीज भूमि में वोये जाएंगे, वे सब अपने-अपने अनुकूल परमाणुओं को ही भूमि से खीचेंगे। यदि कोई बुरा विचार मन में उत्पन्न हो जाए, तो फिर उसी प्रकार के विचारों की लड़ी मन में बन जाती है और वह तब तक बंद नहीं होती, कि स्वयं मनुष्य अपनी प्रवल संकल्प शक्ति से अपने मन को उस ओर से रोक न लें। आकाश में अच्छे से अच्छे और बुरे से बुरे विचार विद्यमान हैं, केवल उन विचारों को ग्राहण करने के लिए एकाग्र चित्त से उस ओर मन को लगाना पर्याप्त है। जब तत्वदर्शी किसी विषय या पदार्थ पर विचार करता है, तव उसी संवंध में नयी-नयी वातें उसके मन में उठने लगती हैं और ये ऐसी बातें होती हैं, जो स्वयं सोचने वालों के लिए भी सर्वथा नई व विस्मित-आश्चर्यजनक होती हैं।

अध्यात्म विद्या के आचार्य जब अपने किसी शिष्यसे कोई काम करवाना चाहतेहैं, तबअपने विचारों को उसके मन में रख देते हैं। ये विचार उसके अंदर पहुँचकर उसको वही कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। यही मानसिक प्रेरणा है। यही गुप्त आध्यात्मिक संबंध और आत्मिक सहायता है, जो पूर्व के संत महात्मा अपने शिष्यों के साथ रखते थे। यदि हम किसी के प्रति बुरे वितारों की भावना करेंगे, तो वे वहाँ दुःख और घृणा के विचारों की भावना करेंगे, तो वे अदिक मात्रा लेकर लौटकर हमें मिलेंगे और यदि प्रें व स्नेह के विचार भेजेंगे, तो वे भी अपना प्रभाव डालकर अधिक प्रेम उत्पन्न करेंगे। इसी कारण से हमारा मन जिससे घृणा करता है, वह भी उसी प्रकार हमसे घृणा करेगा और जिसके प्रति हम प्रेम के विचार करते हैं, उसके मन में भी हमारे प्रति प्रेम के विचार उत्पन्न होंगे। हमारे शास्त्रों में तो प्रत्येक मनुष्य को जीवमात्र की भलाई के लिए उपदेश दिया है।

सर्वे भवन्तु सुखीनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्व भद्रानि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखग्भावेत् ।।

अर्थात् सभी जीवों को सुख प्राप्त हो, सब प्राणी निरोगी हो, सवका कल्याण हो, किसी को भी दुःख न हो।

जव एक मनुष्य अपने अंदर से सभी जीवों के प्रति शत्रुता के विचार निकालकर सभी की भलाई और सबके सुख की प्रार्थना करता है, तव उसको उसके वदले में विश्व मात्र का प्रेम प्राप्त होता है और तब संसार का कोई पदार्थ उसके लिए दुःखदायी नहीं रहता।

अतः हम सवको सबकी सुख-समृद्धि व शांति की कामना के लिए प्रातः-सायं संकल्प शक्ति के साथ,

'ओ३म द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः शान्तिः सा मा शान्तिरेधिः।

हे सर्व रक्षक प्रभु द्युलोक शान्तिमय है, अन्तरिक्ष शान्तिमय है, पृथ्वी शान्तिमय है। जल प्राण शान्तिदायक है। सभी औषधियाँ सुखदायी हैं। सब विद्वान लोग उपद्रव निवारक हैं। आपकी वेदवाणी सुखदायी हैं। सभी वस्तुएं शांतिकारक हैं, स्वयं शान्ति भी शान्तिमय है। प्रभु वही शान्ति मुझ उपासक को भी प्राप्त होवै।

इसी प्रकार विचार व संकल्प शक्ति के साथ प्रतिदिन समस्त जीव मात्र के कल्याण की प्रार्थना करनी चाहिए, उससे हम सवका भला होगा। वास्तव में हमारी दुनिया वह नहीं है, जिसको हम मानते हैं। बल्कि वह है, जिसका हम विचार करते हैं, संकल्प करते हैं। मानव विचारों का पुतला है। जैसे जिसके विचार होते हैं, वैसा ही वह बन जाता है। अतः मनुष्य को निराशावादी न होकर सदैव सद्विचारों के साथ, प्रसन्नता, स्वास्थ्य और सफलता के विचारों को शुभसंकल्प के साथ मन में धारण करना चाहिए। सुख और आशा की तरंगे ही रक्त की

(पृष्ठ ४ का शेष)

गति पर उत्तम प्रभाव डालेगी और शुद्ध तथा लाल करके स्वास्थ्य के सुख प्रभाव को

महर्षि दयानंद के पूना के प्रवचनों का संक्षिप्त परिचय

खुशहालचंद्र आर्य

महर्षि दयानंद ने पूना में २५ प्रवचन दिये थे। जिनमें बहुत सारगर्भित वातें वताई गई थी। उन प्रवचनों को हर व्यक्ति के लिए अति उपयोगी समझकर मैंने यह लेख लिखा है। इन प्रवचनों को पढ़कर मेरी भी कई शंकाओं का समाधान हुआ है। मेरा पूरा परिवार पुनर्विवाह के पक्ष में है। मेरे स्व. पूज्य पिता गोविंदराम आर्य (प्रधानजी) ने अपने जीवन में १०-१२ बाल विधवाओं का विवाह अच्छे योग्य विधुर या कुँवारे युवकों से पुनर्विवाह करवाकर उनको नरकीय जीवन से निकालकर स्वर्गीय जीवन प्रदान किया। साथ ही अपने तीन पुत्रों व पौत्रों का विवाह बालविधवाओं से करके अपनी बहु वनाकर उनका जीवन सुखी किया और मैंने स्वयं ने भी मेरे एक विधुर पुत्र चि. दिनेश का विवाह एक विधवा, जिसकी गोद में ३-४ वर्ष की बच्ची थी, के साथ करवा दिया और पुण्य का भागी वना। परन्तु महर्षि ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में विधवा विवाह की स्वीकृति नहीं दी है और नियोग को माना है। पर उन्होंने पूना के बारहवें प्रवचन में पूर्णतः स्त्रियों को भी पुनर्विवाह की स्वीकृति दी है, जिसको पढ़कर मुझे वड़ी प्रसन्नता हुई। पंद्रह प्रवचन इसी भाँति हैं-

प्रथम प्रवचन में महर्षि ने 'ओ३म्' को ईश्वर का सर्वोत्कृष्ठ नाम बताया है, जिसमें ईश्वर के सभी गुणों का समावेश है। दूसरे में श्रीकृष्ण को भद्र व आप्त पुरुष बताया है और हिरण्यगर्भ को ज्योति स्वरूप परमात्मा का नाम वताया है। इसी में उपासना का लाभ बताते हुए उपासना द्वारा आत्मा में सुख की अनुभूति होती है ऐसा लिखा है। तीसरे प्रवचन में धर्म और अधर्म की विवेचना की है और मनु महाराज के धर्म के दस लक्षणों को वताते हुए इसमें अहिंसा को जोड़कर धर्म के ग्यारह लक्षण बताये हैं। प्राचीन काल में नारियाँ पढ़ती थी और विदूषी हुआ करती थी। गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कत्यावनी आदि के नाम भी दिये हैं। चतुर्थ प्रवचन में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग मूर्तिपूजा न बताकर ज्ञान, कर्म और उपासना को बताया है। पूजा का अर्थ धूप और भोग लगाना नहीं, अपितु सत्कार व सम्मान करना बताया है। मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करना आदि अशास्त्रीय बताया है। पाँचवें प्रवचन में संस्कृत भाषा सब भाषाओं को जानती है, वेद सब सत्य विधाओं का पुस्तक है, इनमें विमान विद्या तथा अस्त्र विद्या आदि सभी विद्याएं हैं। ब्रह्मा के चार मुख थे, ऐसा कहा जाता है। परंतु उन्हें चार मुख न होकर उन्हें चारों वेद कण्ठस्थ थे, इसीलिए ब्रह्मा को चतुर्मुखी कहा जाता है।

स्वामीजी ने षष्ठ प्रवचन में बताया है कि मनुष्य का सच्चा आभूषण सत्य बोलना है। ईश्वर मनुष्यों को कर्मफल, दुःख व सुख के रूप में पूर्व जन्म में किये कर्मों के अनुसार देता है। पशु-पक्षी केवल भोग योनी है, जबकि मनुष्य भोग येनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है। इसे किये हुए कर्मों का फल ईश्वर देता है। गरूडादि पुराणों का खण्डन किया है। फलित ज्योतिष देश में महाभारत के बाद आयी है। महाभारत तक जन्म पत्रिकाओं का कोई वर्णन नहीं मिलता तथा ८४ लाख योनियाँ गप्प हैं। योनियों की संख्या केवल ईश्वर ही जानता है। योनियाँ बताना मनुष्य के अधिकार के बाहर की चीज़ है। सप्तम प्रवचन में महर्षि ने बताया है कि हवन करने से वायु शुद्ध होती है। ब्राह्मणों ने वेदों को कण्ठस्थ करके वेदों की रक्षा की। गाय आदि पशुधन के ह्रास से दूध घृत की कमी होने से राष्ट्र कमज़ोर होता है। यज्ञों में पशुओं को मारकर डालना वेद के विरुद्ध है आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। अष्टम प्रवचन में महर्षि ने कहा है कि हमें ग्रंथों की प्राचीनता का ध्यान न रखकर सत्य ग्रंथों को ही मानना चाहिए। उन्होंने मनु महाराज की मनुसमृति में जो स्वार्थी लोगों ने जो स्वार्थी लोगों ने प्रक्षेप श्लोक घुसा दिये हैं, उनके लिए बहुत रोष प्रकट किया है। महर्षि की विनम्रता उनके इसी कथन से प्रकट होती है कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूँ, मुझसे भी भूल हो सकती है। सो जो भी मेरी भूल को बताएगा, उसको मैं स्वीकार करूँगा और ठीक करने का प्रयत्न करूँगा। स्वामीजी ने 'आर्य' नाम को बहुत श्रेष्ठ बताया और हिंदू नाम का विरोध किया है। स्वामी जी ने कहा है कि हम लोग भ्रष्ट हुए सो हुए, परन्तु हमें नामभ्रष्ट नहीं होना चाहिए। नवम प्रवचन में ऋषि ने कहा है कि आर्यों को युद्ध विद्या अच्छी आती थी। इतिहास में इसके प्रमाण मिलते हैं। दूसरी बात यह है कि हमें अंग्रेज़ों के गुणों को भी अपनाना चाहिए। दशम प्रवचन में स्वामीजी ने बताया है कि राजा शन्तनु से देश की स्थिति बिगड़नी शुरू हुई और महाभारत के युद्ध की समाप्ति के वाद से देश की हालत बिगड़ती ही जा रही है। स्वामीजी ने यह भी बताया है कि तैतिस कोटी देवताओं का अर्थ तैंतीस करोड़ नहीं, तैंतीस प्रकार के देवती होते हैं। कोटि को करोड़ मानना भूल है। लोगों की यह धारणा है कि विष्णु, महादेव, इंद्र ये सब देवता अमर हैं। परन्तु स्वामीजी का कहना है कि जो जन्म लेगा, वह अवश्य ही मरेगा। इसलिए अमर कोई भी नहीं है। स्वामीजी ने एक व्याख्यान में पाणिनी ऋषि की बड़ी प्रशंसा की और उनके द्वारा लिखी गई पाँच पुस्तकें शिक्षा, उणादि गण, धातुपाठ, प्रातिपदिगण एवं अष्टाध्यायी का वर्णण भी किया है। लोगों की यह धारणा कि अस्त्र-शस्त्र मन्त्रों के उच्चारण से चलते थे, यह भूल है। क्षत्रियों को धनुर्वेद सीखने के लिए वड़ा परिश्रम करना पड़ता था। उन्होंने यह भी बताया कि लोगों का कहना है कि छह दर्शनों में परस्पर विरोध है। वह विरोध इनमें नहीं है बल्कि ये एक-दूसरे के पूरक हैं। स्वामीजी ने बताया कि पतंजलि मुनि ने मुक्ति प्राप्ति की जो युक्तियाँ बताते हुए और परमेश्वर में चित्त लगाने की शिक्षा देते हुए यह कहीं नहीं बताया कि मूर्तिपूजा भी कोई साधन है। इसीलिए उपासना के वर्णन में कहीं भी मूर्तिपूजा का सहारा नहीं मिलता है। उन्होंने यह भी बताया कि पाराशर और अश्वलायन गृह्यसूत्रों में कहीं भी मूर्तिपूजा का नाम तक नहीं है। कल्पसूत्रों में भी

www.thearyasamaj.org

मूर्तिपूजा का कहीं वर्णण नहीं है। स्वामीजी ने स्वयंवर विवाह की प्रशंसा की है। स्वामीजी कहते हैं कि लोगों ने धर्म को बड़ी नर्म वस्तु मान लिया। घास का तिनका तोड़ने में भी कुछ देर लगती है, पर धर्म के टूटने में कोई देर नहीं लगती। चोटी में गाँठ नहीं लगाई, तो धर्म गया। खाने-पीने के बखेड़े को धर्म माने लगे, जिससे वीरों को कायर बना दिया।

द्वादश प्रवचन में महर्षि ने पुनर्विवाह का समर्थन किया है। कहा है कि ईश्वर के लिए स्त्री-पुरुष समान हैं। जब पुरुषों को पुनर्विवाह करने की आज्ञा है, तो स्त्रियों को दूसरा विवाह करने से क्यों रोका जाए। इसमें नारी जाति को शिक्षा देने का समर्थन किया गया है। भ्रूण हत्या को महापाप बताया गया है। अन्ध परंपरा का विरोध किया गया है। विदेशी भाषाएँ सीखने का समर्थन किया गया है। महर्षि ने लिखा है कि जंहाँ नीच और क्षुद्र लोग देश चलाने में परामर्श देने लग जावें, तो देश ज़रूर ही अवनति को प्राप्त होगा। जहाँ शकुनि जैसे संकीर्ण ह्रदय और क्षुद्र मनस्क जन की सम्मति से राज्य चलाने लगे, कणिक शास्त्री धर्माधर्म का निर्णय करने लगे, वहाँ यदि घर में फूट उत्पन्न होकर घरवालों का विनाश हो गया हो, तो आश्चर्य ही क्या है? (नोट :- यह बात हमारे देश और आर्य समाज की शीर्ष संस्थाओं में घट रही है, वर्तमान में)

स्वामीजी ने मार्टिन लूथर के सुधारवादी विचारों की प्रशंसा की। यादवों के विनाश का कारण प्रमाद, विषयासक्ति, मद्यपान और फूट बताया। आदि शंकराचार्य ने वेदमत का प्रचार किया, पाखण्ड मतों का खण्डन किया, लिखा है।

त्रयोदश प्रवचन में महर्षि कहते हैं कि वेदों में कहीं पर भी मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा का विधान नहीं है। मूर्तिपूजा जैनियों से चली है और पुराणों में इसका वर्णण है। मूर्तिपूजा निन्दनीय है और यह मात्र व्यावसायिक बन गई है। आर्यवर्त का क्षेत्र असाध्य नहीं है, परंतु वैदिक धर्म के प्रचार से ही देश का पुनरुद्धार संभव है। चतुर्दश प्रवचन में गायत्री मंत्र को उपासना का सर्वश्रेष्ठ साधन बताया है। ईश्वर और जीव का संबंध कैसा है, यह बताया गया है। परमात्मा और जीवात्मा को एक मानना ठीक नहीं। उसका संबध व्यापक और व्याप्य, सेव्य और सेवक का होता है। पंचदश प्रवचन में स्वामीजी ने जोशी अमरलाल जिसने स्वामीजी को पढ़ने के समय जो उपकार किया, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। अपने ज्ञान को सब लोगों तक बाँटने की कामना की। मेरे जैसे अनेक उपदेशकों से ही धर्मोन्नति सम्भव है ऐसा बताया। अपनी हार्दिक इच्छा ईश्वर से एस प्रकार प्रार्थना करते हुए प्रकट की। अपने ज्ञान को सब लोगों तक बाँटने की कामना की। मेरे जैसे अनेक उपदेशकों से ही धर्मोन्नति सम्भव है बताया। अपनी हार्दिक इच्छा ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना करते हुए प्रकट की कि हे ईश्वर । सर्वत्र आर्य समाजें कायम हों, जिससे मूर्तिपूजादि दुराचार दूर हो जावें। वेद शास्त्रों का सच्चा अर्थ सबकी समझ में आ जावे और उन्हीं के अनुसार लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो। मुझे पूरी आशा है कि आप सब सज्जनों की सहायता से मेरी यह इच्छा पूर्ण होगी।

पूरे शरीर में बाँट देगी। धार्मिक और लौकिक दोनों विषयों में मनुष्य उतना ही सफल होता है, जितना उसका संकल्प दृढ़ होता है। यदि कोई किसी कार्य में असफल है, उसका कारण उसका दुर्भाग्य नहीं, बल्कि उसके संकल्प की निर्बलता है। मनुष्य के अंदर यह बहुमूल्य गुप्त शक्ति ऐसी है, कि जो कोई उससे काम लेना शुरू कर देता है, उसको वह महान बना देती है। मानव के संकल्प में अद्भुत शक्ति है, यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो उस शक्ति को अपने अंदर उत्पन्न और विकसित करें। इसलिए जो मनुष्य जैसा बनना चाहता है, उसको दृढ़ संकल्प के साथ अपने अंदर वैसे ही विचार उत्पन्न करने चाहिए। जब मनुष्य अपने शुभ संकल्प व दृढ विचार के साथ खड़ा हो जाता है, तब कोई वस्तु उसको अपने उद्देश्य से नहीं रोक सकती। ऐसे पुरुषार्थी मनुष्यों की सहायता के लिए प्रकृति अपना कार्य करती है। एक साधारण पुरुष बी अपनी आत्मिक संकल्प शक्तियों से काम लेकर बाद में महान बन जाता है। संसार में ऐसे बहुत से महापुरुष हुए हैं, जो साधारण व्यक्ति से महान बन गये। महर्षि दयानंद सरस्वती को साधारण साधु से वर्तमान काल के ऋषि बनाने वाली उनकी संकल्प शक्ति ही थी। समस्त भारत वर्ष उनके विचारों से विरोध रखता था। परंतु जब वह मनस्वी एक बार अपने क्षेत्र पर आरूढ़ हो गया, तो कोई भी मनुष्य उनके सम्मुख खड़ा न हो सका। इसका कारण उसकी अगाध विद्या ही नहीं थी, बल्कि दृढ़ संकल्प शक्ति और उस शक्ति में पूर्व विश्वास होना था। इसी संकल्प शक्ति के सहारे श्री लाल बहादुर शास्त्री व अब्राहम लिंकन जैसे साधारण मनुष्य भी महान व्यक्ति बन गये। दृढ़ और बलवान संकल्प शक्ति के कारण मनुष्य में ऐसी योग्यता आ जाती है, कि वह अपने विचारों को बहुत बड़ी शक्ति दे सकता है। अपने लक्ष्य पर फिर वह अपने विचार को उस समय तक स्थिर रखता है, जब तक उसका अभीष्ट प्राप्त नहीं हो जाता। जो अपना दृढ़ विचार बनाकर फिर दूसरों की दृढ़ संमतिके कारण उसे बदल देता है, तो उससे भी उसकी हीन संकल्प शक्ति का पता लगता है कि वह दूसरों की संमति का दास है। उसे कदम-कदम पर असफलता देखनी पड़ती है। इसीलिए संकल्प शक्ति का महत्व समझना चाहिए, किन्तु हठ, दुराग्रह और उच्छृंखलता को ही संकल्प या विचारशक्ति नहीं समझ लेना चाहिए। संकल्प शक्ति और हठादि में महान अंतर है। पहली आचार की दृढ़ता और श्रेष्ठता का प्रतीक है और दूसरा उसकी निर्बलता का परिणाम है।

संकल्प शक्ति को पूरा विकास देने के लिए दृढ़ आत्मविश्वास की आवश्यकता है और आत्मविश्वास की दृढ़ता आस्तिकता अर्थात् ईश्वर भक्ति से होती है। जब मनुष्य सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान सर्वज्ञ ईश्वर पर पूर्व विस्वास और उसका सहारा लेकर सभी कार्यों को उसे समर्पित करते हुए अनासक्त और निष्काम भाव से उसके लिए ही अपने को केवल उसका एक साधन समझकर कर्तव्य रूप से करता है, तो उसकी स्वयं अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ भी आगाध और असीम हो जाती हैं। यही कारण है कि ईश्वर भक्तों द्वारा जो महान कार्य और अद्भुत चमत्कार अनायास साधारणतया प्रकट हो जाते हैं, उनके अनुकरण करने में संसार की सारी भोतिक शक्तियाँ अपना बल लगाकर भी असमर्थ रहती हैं।

अतः सत्पुरुषों के सारे संकल्प, इच्छाएँ ईश्वर के समर्पण और उसी की प्रेरणा से होते हैं। इसीलिए वे जो संकल्प करते हैं, वे पूर्ण होते हैं।

इत्योम् शम्।

www.thearyasamaj.org

हैदराबाद में आर्य समाज की स्थापना

- डॉ. आनंदराज वर्मा

युग पुरुष दयानंद सरस्वती ने ७ मार्च १८७५ को बंबई (आज के मुंबई में) में 'आर्य समाज' की स्थापना की थी। इस संगठन का लक्ष्य था सामाजिक कुरीतियों तथा धर्म के आडंबरपूर्ण कर्मकांड के विरुद्ध जनजागृति उत्पन्न करना तथा पूरे देश में वैदिक मूल्यों के आधार पर एक जागरूक एकता स्थापित करना। लेकिन हैदराबाद में इस संगठन ने राष्ट्र की अस्मिता तथा धर्म की रक्षा के लिए जिस बलिदानी संघर्ष का उदाहरण प्रस्तुत किया, वह देश के सामाजिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला एक अध्याय है।

प्रारंभिक युग - हैदराबाद में आर्य समाज की स्थापना मार्च १८९२ में 'आर्य समाज सुल्तान बाजार' के नाम से हुई। यह क्षेत्र उस समय रेजिडेंसी की सीमा में था। इस आर्य समाज की स्थापना का श्रेय महर्षि दयानंद जी के शिष्य स्वामी गिरानंद को है। घारूर की अपेक्षा अधिक अनुकूल परिस्थितियां होने के कारण यहां आर्य समाज के बीज को अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित होने में अधिक सुविधा हुई।

'आर्य समाज, सुल्तान बाजार' के प्रथम अध्यक्ष पंडित कामता प्रसाद जी मिश्र थे। श्री लक्ष्मणदास जी प्रथम मंत्री चुने गये एवं पंडित विश्वंभरनाथ जी उपाध्यक्ष तथा श्री नरसिम्हलु जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। पंडित आदिपुडि सोमनाथ राव जी और पंडित हरिहर देव जी उपदेशक नियुक्त हुए। पंडित आदिपुडि सोमनाथ राव जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' का तेलुगु में अनुवाद किया।

आर्य समाज के कार्यों को चलाने के लिए पुतली बावली रोड पर एक मकान पांच रुपये किराये पर लिया गया। यह मकान सेठ जमनादास जी का था। इसके बाद हैदराबाद में सबसे पहले प्रकाशित होने वाला दैनिक समाचार पत्र 'मुशर-ए-दक्कन' के संपादक किशनराव जी ने हश्मतगंज में अपना घर छः रुपये किराये पर दिया, जहां समाज के साप्ताहिक सत्संग होते थे। उसी समय हैदराबाद के प्रसिद्ध वकील राय कुंवर बहादुर जी, आर्य समाज में सम्मिलित हुए और वैदिक सिद्धांतों के सहज अनुयायी बन गए।

१८९३ के आरंभ में आर्य समाज सुल्तान बाजार का प्रथम वार्षिकोत्सव 'राजा कंदास्वामी' के बाग में मनाया गया। इस अधिवेशन में आर्य समाज, बंबई के मंत्री सेवकलाल जी, पंडित बालकृष्ण जी शर्मा, उपदेशक स्वामी आत्मानंद सरस्वती सम्मिलित थे। समाज के पदाधिकारियों में पंडित कामता प्रसाद जी मिश्र और नरहर देवजी मंत्री चुने गए।

पंडित शिव शर्मा जी तथा पंडित बालकृष्ण जी शर्मा ने हैदराबाद में चार महीने वैदिक धर्म का प्रचार किया, जिसके फलस्वरूप सनातनियों में एक हलचल मच उठी और एक ज्योतिषि पंडित हरिकेशव जी पंचपक्षी ने सनातन धर्म की आड़ लेकर 'पुरुषोत्तम समाज' की स्थापना की। आर्य समाजियों तथा सनातन धर्मियों में अपने-अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों को ही सही मनवाने की होड़ लग गयी। सनातन धर्मियों ने सनातन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान पंडित गोकुल प्रसाद जी हप्तजवां को आर्य समाजियों से शास्त्रार्थ करने हैदराबाद आमंत्रित किया।

सनातन धर्मियों से पहला शास्त्रार्थ राजा शिवराज धर्मवंत बहादुर की अध्यक्षता में उन्हीं के निवास स्थान पर हुआ। पंडित गोकुल प्रसाद जी की आर्य समाज पर टीका-टिप्पणी के उपरांत जब पंडित बालकृष्ण जी शर्मा उत्तर देने वाले लगे, तो अध्यक्ष महोदय ने पक्षपात से काम लिया और उन्होंने इसकी अनुमति नहीं दी। परिणामस्वरूप यह शास्त्रार्थ किसी निर्णय के बिना ही हुल्लड़ के साथ समाप्त हो गया।

इसके उपरांत ११-९-१८९४ को राजा मुरली मनोहर बहादुर ने दोनों दलों के बीच एक शास्त्रार्थ कराने का प्रयत्न किया। आर्य समाज की ओर से स्वामी विश्वेश्वरानंद जी और स्वामी नित्यानंद जी महाराज को आमंत्रित किया गया। इन दोनों के व्याख्यानों का सनातनी तथा मुसलमानों दोनों ने घोर विरोध किया और निज़ाम के पास शिकायत भी की, जिसके फलस्वरूप दोनों स्वामी को हैदराबाद नगर से चले जाने का आदेश दिया गया। इस आदेश के विरोध में लाला लाजपत राय, महाराजा बडोदा, महाराजा शाहपुरा, महाराजा ईडर आदि ने निज़ाम को तार दिया, परंतु निज़ाम की सरकार ने इस विरोध की कोई परवाह न की।

दूसरा शास्त्रार्थ : पंडित ज्वाला प्रसाद जी शर्मा, उत्तर प्रदेश, पंडित पूर्णानंद जी, पंजाब, आर्य समाज के ११वें अधिवेशन पर पधारे थे। उस समय हैदराबाद में अच्युत स्वामी के साथ यज्ञ में 'पशुबलि वेद-विरुद्ध है' विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज के पंडितों ने वेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि यज्ञ में पशु-हिंसा निषिद्ध है। इस शास्त्रार्थ का जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

तीसरा शास्त्रार्थ : आर्य समाज रेज़िडेंसी (वर्तमान आर्य समाज मंदिर, सुल्तान बाजार) के १२वें अधिवेशन पर अधिकारियों को इस बात का पता चला कि कृष्णा नदी के तट पर सोम यज्ञ हो रहा है, जिसमें बकरे की आहुति दिए जाने का निश्चय किया गया है। यह जानकर आर्य समाज ने पंडित सोमनाथ राव जी को वहां भेजा। इस यज्ञ के ब्रह्मा अच्युत स्वामी जी से राजा नरसिंह गिरिजी की कोठी में शास्त्रार्थ होना निश्चय हुआ। पं. तुलसीराम जी, पं. ज्वालाप्रसाद जी, पं. आर्य मुनि जी, पं. रूद्रदेव जी तथा पं. पूर्णानंद जी आदि विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया गया। एक मास तक वाद-विवाद चलता रहा। किंतु शास्त्रार्थ आगे न हो सका।

इसी बीच १८९४ में स्वामी नित्यानंद हैदराबाद पधारे। उन्होंने आर्य समाज से संबंध रखने वाले विभिन्न विषयों पर ३० व्याख्यान दिए। स्वामी जी के ये व्याख्यान प्रायः हैदराबाद नगर के शिक्षित एवं सुप्रसिद्ध, उच्च पदों पर कार्यरत, प्रतिष्ठित व्यक्तियों की अध्यक्षता में होते थे। इनमें अधिक व्यक्ति मुसलमान भी थे, जैसे नवाब जफरजंग बहादुर, नवाब इमादुल्मुल्क, नवाब सैय्यद हुसैन बिलगिरानी आदि। स्वामी जी तथा दूसरे विद्वानों के भाषणों से प्रभावित होकर

www.thearyasamaj.org

अमीर-ए-पायगाह नवाब जफरजंग बहादुर ने इन विद्वानों को अपने यहां आमंत्रित किया, दावत दी और इन्हें ५०० रुपये का पारितोषिक भेंट किया।

शास्त्रार्थ में अपनी बात न मनवा सकने के कारण सनातनधर्मियों तथा पौराणिक पंडितों ने मुसलमानों के उच्च अधिकारियों तथा मुस्लिम मतावलंबियों को सत्यार्थ प्रकाश दिखाकर भड़काना एवं बहकाना शुरू कर दिया। इन पंडितों के विद्वेषपूर्ण प्रचार का प्रभाव यह हुआ कि शासन की ओर से निज़ाम राज्य की सीमा में आर्य समाज स्थापित न करने का आदेश दिया गया। आर्य समाज के विरुद्ध निज़ाम सरकार का यह प्रथम और हल्का प्रहार था।

सन् १८९७ में जिन सज्जनों ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अधिक सेवाएं दीं, उनमें महात्मा बेनी माधव जी, पं. योगानंद जी, पं. केशवराव जी कोरटकर, वकील हाईकोर्ट, राजा गोविंद प्रसाद जी, श्री इंद्रजीत जी और भवानी शंकर जी के नाम उल्लेखनीय हैं। 'समाज' के जीवन के सातवें वर्ष राय कुंवर बहादुर प्रधान और पं. कामता प्रसाद जी मंत्री चुने गये। १९०० ई. में सदस्यों की भर्ती का कार्य संतोषजनक रहा। गोस्वामी ज्ञानगीर जी नरसिंह गीरजी की कोठी (वर्तमान प्रतापगीर जी की कोठी - ई.एन.टी. अस्पताल) में समाज के उत्सव किये जाने लगे।

हरिजन भाइयों का सुधार : आर्य समाज ने ऊंच-नीच एवं जाति-पाति के बंधनों को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। हैदराबाद में दलित जातियों की अत्यंत दयनीय स्थिति को आर्य समाज ने महसूस किया तथा हरिजनों के सुधार का रचनात्मक कार्य आरंभ किया गया।

आर्य समाज की लोकप्रियता : १८९२ से १९०० तक ८-९ वर्ष की अविध में आर्य समाज की जड़ें मजबूत हो चुकी थीं। उसका उद्देश्य हिन्दू समाज का सुधार करके उसे वैदिक धर्म के सीधे रास्ते पर चलाना तथा बिना किसी भेदभाव के सबकी सेवा करना था। आर्य समाज की मानव कल्याण एवं सेवा भावना सक्रिय रूप से शनैः शनैः स्पष्ट होने लगी।

स्त्रियों में जागृति एवं महिला सभा की स्थापना की ओर भी ध्यान दिया गया। समाज की ओर से आर्य कन्या पाठशालाएं एवं रात्रि पाठशालाएं स्थापित की गयीं। पहला विद्यालय देवीदीन बाग में स्थापित किया गया। १९०१ में 'स्त्री समाज' के नाम से एक महिला सभा स्थापित की गयी। १९०१ में सिकंदराबाद में आर्य समाज की स्थापना की गयी। इस कार्य को पूरा करने में श्री आदिपुडि सोमनाथ राव जी श्यामराव जी, वासुदेव राव जी, मुदलियार के नाम उल्लेखनीय हैं। मुंशीराम जी ने समाज-मंदिर के निर्माण के लिए २५ हजार रुपये की भूमि दान की। आज यहां जो एक सुंदर भवन दिखायी दे रहा है, उसे निर्माण में सर्वश्री बी.वी. गुरुमूर्ति जी, राम रखा जी, पं. मनोहरलाल जी तथा बी.आर. लक्ष्मैया जी का विशेष सहयोग प्राप्त रहा।

पिछले युग में आर्य समाज की स्थापना के साथ जिन प्रसिद्ध व महान पुरुषों का संबंध रहा, उनमें स्व. दामोदर सातवलेकर जी, पं. धीरेश्वर जी, पं. नरदेव जी शास्त्री, पं. गया प्रसाद जी आर्य, कामता प्रसाद जी, चंदूलाल जी के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं, जो अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हैं।

१८९६ में ही केशवराव कोरटकर आर्य समाज, सुल्तान बाजार के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और १९३२ ई. में मृत्युपर्यंत इसके प्रधान तथा प्राण बने रहे। 'आर्य प्रतिनिधि सभा' ने तेलुगु में 'सत्यार्थ प्रकाश' का अनुवाद करवाया, जो १९०६ से आरंभ होकर १९१२ तक चलता रहा।

हैदराबाद राज्य के विभिन्न स्थानों में आर्य समाज स्थापित करने का अभियान शुरू हुआ। १९२५ में गुलबर्गा में आर्य समाज स्थापित हुआ। १९२९ में नलगोंडा में आर्य समाज स्थापित हुआ। १९२७ में महाराजगंज नामक आर्य समाज नामपल्ली रेलवे स्टेशन के निकट स्थापित हुआ। १९३० में एक अन्य समाज धूलपेट (ध्रुवपेट) में स्थापित किया गया। इसके प्रधान कार्यकर्ता ठाकुर उमराव सिंह जी और ठाकुर सूरज सिंह थे। १९३० में ही श्रीमंगल देव और कतिपय उत्साही व्यक्तियों के प्रयत्न से राज्य के विभिन्न जिलों और ताल्लुकों में आर्य समाज की २५-३० शाखाएं स्थापित हो गयीं। १९३३ में रायचूर तथा लातूर में आर्य समाज की शाखाएं स्थापित हुईं। १९३४ में काचीगुड़ा में एक आर्य समाज स्थापित हुआ। १९३५ में बीदर जिले में साकोल गांव में एक समाज की स्थापना हुई।

७-१२-१८३० से आर्यसमाज का प्रथम समाचार पत्र, वैदिक आदर्श प्रकाशन आरंभ हुआ, जिसके सम्पादक श्री चन्दुलाल जी थे, तथा सम्पादननरेंद्र के जिम्मे था। वैदिक आदर्श का प्रकाशन राज्य की मुस्लिम पत्रकारिता के लिए चैलेंज था एवं दुःख तथा शोक का कारण भी रहबर-ए-दकन, सुबहे दक्कन तथा अलाआज़म जैसे सांप्रदायिक समाचारों के हिन्दुओं पर आरंभ आक्रमण तथा गलीगलौज का उत्तर गंभीरता पूर्वक वैदिक आदर्श देता था।

द्वितीय युग : ४ अप्रैल १९३१ को हैदराबाद राज्य के आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना के साथ इस प्रदेश के इतिहास में आर्यसमाज के दूसरे युग का श्रीगणेश होता है। इसी वर्ष संपन्न चुनाव में अध्यक्ष होईकोर्ट के जज केशव राव, मंत्री चंदूलाल आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री विनायक राव विद्यालंकार चुने गए।

इस युग में कई स्थानों पर आर्य समाज की शाखाएं स्थापित की गयीं। १९४० में सूर्यपिट तथा खम्मापेट में तथा वरंगल में १-१०-१९४० को बंसीलाल तथा श्यामलाल सदृश कर्मठ कार्यकर्ताओं और प्रचारकों के प्रयत्न का ही यह परिणाम था कि १९४१ तक हैदराबाद राज्य में १४५ आर्य समाज स्थापित हो गये थे।

तीसरा युग: १९४० से १९४८ तक आर्यसमाज की प्रगति का तीसरा युग था। इस युग में न केवल आर्य समाज का और विस्तार हुआ, अपितु हैदराबाद के स्वतंत्रता संग्राम में समाज ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया इस युग का मुख्य योगदान 'सत्याग्रह' था। हैदराबाद में सत्याग्रह शुरू करवाने का श्रेय श्री बंसीलाल को दिया जाता है। वह हैदराबाद को निज़ाम सरकार की नादिरशाही धार्मिक पाबन्दियों की ओर सार्बदेशिक सभा का ध्यान निरन्तर आकर्षित करते रहे। श्री बंशीलाल के अनुज श्यामलाल आर्य समाज के धर्म प्रचार के मूर्तिमान आदर्श थे। आर्यसमाज का सत्याग्रह आंदोलन हैदराबाद के मुक्तिसंग्राम का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

(शेष पृष्ठ २० पर)

देश के चार महान राजनीतिज्ञ

- खुशहालचंद्र आर्य

जब हम अपने प्यारे भारत के अतीत का उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं, तो हमें चार महान राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है, जो भारत के नभ-मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण दैदिप्यमान है। उनके नाम हैं भगवान श्रीकृष्ण, आचार्य चाणक्य, महाराज शेर शिवाजी एवं लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल। इन चारों का हम यहाँ पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इस भाँति है -

भगवान श्रीकृष्णा - ये एक महान योद्धा, बलवान, कुशाग्र बुद्धिमान, साहसी व परम् धैर्यवान ते थे ही, एक महान राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ से महान योद्धा दादा भीष्म, महारथी गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के वाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौणी सेना के होने पर भी भगवान श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी, जिसने पाण्डवों का कमज़ोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई. इस विजय का पूरा श्रेय भगवान श्रीकृष्ण को जाता है। महाभारत में एक नही,अनेक ऐसे स्थल आते हैं, यदि उस समय श्रीकृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते, तो पांडवों का विजयी होना असम्भव ही था। कर्ण, अर्जुन से हर वात में अधिक वलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना अर्जुन द्वारा अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल वनाना, दादाभीष्म व गुरु द्रोणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दूर्योधन की जाँघ पर भीष्म द्वारा प्रहार करवाना आदि सामयिक कार्य करवाना श्रीकृष्ण की बुद्धिमत्ता थी, जिसके कारण पांडवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे। उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्‌भुत क्षमता थी, जिसके कारण वे हारी बाज़ी को भी जीत लेते थे। वे वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह वंग करवाकर युद्ध के लिए तैयार कर सके। भगवान श्रीकृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह 'अहिंसा परमो धर्मः' वाला धर्म नहीं था। उनका धर्म पापियों, दुष्टों को छल, बल आदि किसी भी प्रकार से मार देना ही धर्म था। उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है। उनको मारना भी धर्म है। इसीलिए दूर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को भी पापी समझकर मरवाया। श्रीकृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं, वल्कि अनुकरणीय भी है।

आर्य चाणक्य - भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। जब अवध के अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मंत्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया, तव महापंडित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूँगा और वैसा ही उसने कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। उसने राजमहल के वाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का, जिसका नाम चंद्रगुप्त था, को मित्रों के साथ खेलते हुए देखा। चाणक्य की दूरदर्शी बुद्धि ने जान लिया कि यह वालक विलक्षण बुद्धि का है। यदि इसके शस्त्र विद्या सिखाई याए, तो इसके द्वारा महानंद को परास्त कर सकता हूँ। और ऐसा ही करके उसने चंद्रगुप्त द्वारा महानंद को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके ही दम लूँगा। और उसने वैसा ही कर दिखाया। चणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जव उसने राजमहल के बाहर ही महाराज की दईया मूरी का एक होनहार लड़का चंद्रगुप्त अपने मित्रों के साथ राजा की भूमिका में खेलते देखा, तो जान लयिा कि यह बालक एक विलक्षण बुद्धिवाला है। उसने चंद्रगुप्त को शस्त्रविद्या में निपुण वनाकर महाराजा महानंद को परास्त किया और चंद्रगुप्त को सम्राट बना दिया. इसके बाद खुद चंद्रगुप्त के साम्राज्य का महामंत्री बनकर जंगल में एक कुटिया बनाकर तपस्वी के रूप में रहने लगा। उसने अपनी ही कुटिया में रहकर समूचे साम्राज्य की देख-भाल की। उसने राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ बनाई कि कोई भी राजा चंद्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर भी देखने का दुःसाहस नहीं कर सकता था। चाणक्य ने चाणक्य नीति नामक एक पुस्तक लिखी, जिसे पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान राजनीतिज्ञ, चरित्रवान वा राष्ट्रहित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूँढने से भी बहुत कम मिलते हैं। उसके महामंत्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनंदित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मंत्री जंगल में कुटिया बनाकर रहेगा, जो उसकी जनता महलों में सुख की नींद सोवेगी और जिस राज्य का महामंत्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोपडियों में रहकर दुःखी जीवन व्यथित करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ कर दिखाया। आज देश के शासक व मंत्री महलों व फाइव स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दुःखी है। उन्हें आतंकवादियों का भय और महँगाई की मार सहनी पड़ रही है। उनको चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

शेर शिवाजी - भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवाजी महाराज का भी एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसीलिए वे एक साधारण छोटे से राज्य के राजा होकर, औरंगजेब जैसे अन्यायी वड़े राजा से टक्कर लेने में सफल हो सके। उनकी माता जिजाबाई एक धार्मिक और राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत भाव की विदूषी महिला थी। जिसने अपने पुत्र शिवा को वचपन में ही अच्छी-अच्छी धार्मिक वीरता की कहानियाँ सुना-सुनाकर उसे एक देशभक्त राजा बना दिया। शिवाजी ने अपनी गतिविधियों से औरंगजेब की नींद हराम कर रखी थी । औरंगजेब उसे पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवाजी उन्हें निश्फल कर देते था और उसकी पकड़ में नहीं आता था। एक बार औरंगजेब ने अफज़ल खाँ को शिवाजी से सन्धी करने भेजा,

(शेष पृष्ठ २० पर)

आधुनिकता क्या सांस्कृतिक गुलामी का दूसरा नाम है?

- *विजय बहादुर सिंह*

आधुनिकतावादियों के कई एक तर्कों में से एक-दो अनेकशः कथित तर्क यह है कि यह एक तार्किक परिणति है और इसका क्षेत्र वैश्विक और परिवेश वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक शब्द को लेकर खास तौर पर भारत के आधुनिकतावादियों की धारणा है कि वह वैज्ञानिकता, जो हमारे अपने समय में पश्चिम से आयी है, यानी कि पश्चिम में जो विकसित हुआ विज्ञान और उसकी तर्क पद्धति। विज्ञान अगर सचमुच सिर्प वही है, जिसे पश्चिम के लोगों ने खोजा और उसे साम्राज्यवादी प्रसार और साम्राज्यवादी हिंसा के मार्फत तमाम अच्छे-भले सुसंकृत और समृद्ध जीवन पद्धति को नष्ट कर अपना वर्चस्व स्थापित किया और संबंधित देशों को उपनिवेश बनाकर उनकी आत्मा तक बदलने की साज़िशें रची, तो क्या हम भारत के लोग, जिन्होंने साम्राज्यवादी को धूल चटाते हुए अहिंसा, सत्याग्रह और स्वदेशी की रणनीति अपनायी, यह तर्क मंजूर कर लें कि हम फिर उन्हीं जगहों पर लौट चलें, जहाँ से हम गुलाम हुए थे और अपना स्वत्व खो दिया था? आधुनिकता क्या मानसिक गुलामी के साथ-साथ नई आर्थिक और सांस्कृतिक गुलामी का दूसरा नाम है?

सवाल को एक और ढंग से उठाइयो, तो कह सकते हैं कि नेहरू अधिक आधुनिक थे, गांधी अत्यंत पारम्पपरिक, नेहरू प्रायः पश्चिम से उधार लेकर इस देश को आधुनिक बनाना चाहते थे। कुछ और आगे बढ़कर कहें, तो वे 'देश' को दरकिनार कर एक 'राष्ट्र' पाना चाहते थे। गाँधी का सोचना इससे बिल्कुल अलग था। उन्हें राष्ट्र की चिंता उतनी नहीं थी, जितनी देश की। वे देश और उसकी आत्मा को हर कीमत पर प्राथमिक मानते थे और उसे बचा लेना चाहते थे। हम चाहते, तो आज यह सवाल अपने आप से फिर पूछ सकते हैं कि १८५७ से १९४७ तक सक्रिय राजनितिक धाराओं में वर्चस्वकारी और नेतृत्वकारी धारा कौनसी थी, जिसके पीछे देश के लोग सबसे ज्यादा खड़े थे और उसके बुलावे पर हम हर बार दौड़े चले आए? निश्चय वह भगतसिंहवाली धारा नहीं थी, नेताजी सुबाषचंद्र बोस वाली भी नहीं। वह धारा तो वही थी, जिसका नेतृत्व गांधी कर रहे थे। आज यह देश मंगल पांडे, बहादुर शाह ज़फर, झाँशी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ इन तमाम महानों को अपने पूज्य नायक की तरह देखता है, पर गाँधी को तो राष्ट्रपिता ही मानता है। जिस देश में राम और कृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर, नानक आदि राष्ट्रपिता नहीं कहे गये, उस देश में गाँधी इस पद के अधिकारी माने गये। कुछ लोग कह सकते हैं कि ऐसा १५ अगस्त, १९४७ में सत्ता पा चुके गांधी के सहयोगियों ने किया, तो यह कौन मानना चाहेगा? तव भी मैं यह कहना चाहूँगा कि गांधी महामानव थे, कोई देवता या भगवान नहीं। उनकी अपनी भी सीमाएँ थीं, जैसी की सबकी होती हैं। फिर भी उनकी जो स्वीकृति है, वह सर्वोपरि है। यहीं य कहना भी ज़रूरी है कि आज़ादी के बाद गाँधी देश में तो रहें, पर राष्ट्र ने उनका मात्र कर्मकांड परक् इस्तेमाल किया, वाकी उन्हें सभी स्तरों पर खारिज कर दिया। आवशश्र्श्चर्य तो यह कि राष्ट्र के साथ अपनी पहचान वनाने वाले नेहरू उसी राष्ट्र में उनसे यानि गाँधी से भी अधिक खारिज कर दिये गये और आज तो वे हमारे लिए एक ऐतिहासिक अध्यायभर रह गये हैं।

इस तुलना और विवाद के प्रसंग को उठाकर मैं कोई भद्दी सी वहस नहीं खड़ा कर रहा, वल्कि यह समझने और सोचने की कोशिश कर रहा हूँ कि देश से एकमेक हो रहे गाँधी क्या परंपरा थे और नेहरू आधुनिकता? सच भी है, नेहरू समाजवाद का सपना लेकर आये थे और गाँधी पहले रामराज्य और वाद में सर्वोदय का। भारत के संविधान ने समाजवाद को मंजूरी दी और आज भी वह वहाँ है। पर राष्ट्र तो अव पूँजीवाद के रास्ते पर चल पड़ा है। समाजवाद अब सिर्फ एक सम्मानित शब्द है, जिसकी छाती पर चढ़कर पूँजीवाद नंगा नाच रहा है। पूछा जा सकता है कि क्या हम इसे आधुनिकता कहें? क्या इस आधुनिकता का कोई संबंध उस 'देश' से है, जिसने दांडी मार्च किया, सत्याग्रह और अहिंसा को अपने संघर्षों का अस्त्र-शस्त्र माना, स्वदेशी को अपनी रणनीति की तरह प्रयुक्त किया?

यह सवाल देर-सवेर तो अपने आप से करना ही पड़ेगा कि परंपरा और आधुनिकता जैसे सवालों का इस देश और राष्ट्र से भी कोई संवंध वनता है या फिर इनका वास्ता उन अकादमिक वहसों - मुवाहसों से है, जिन्हें चंद पेशेवर आधुनिकतावादी पंडों की तरह इस या उस मंच पर निपटाया करते हैं। संवंधित अगर है, तो सोचना होगा कि परंपरा को इस देश ने क्या कभी मोहग्रस्त और भावुक होकर ग्रहण किया या फिर अत्यंत सजग, सचेत और हमेशा एक तार्किक पद्धति से गुज़रकर। जवाब साफ है कि परंपरा इसके लिए हमेशा ऐसी ही प्रक्रिया रही, जिसके मूल में इस देश की निथरी हुई। विवेकमत्ता और तार्किकता निरंतर काम करती रही। उसे रचते और ग्रहण करते हुए इस देश ने उसे हमेशा पुनर्नवता प्रदान की।

आधवडुनिक हिन्दी साहित्य में इस तरह के सवालों पर हृदयगम्य विचार आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने किया है। भारतीय परंपरा में गहराई तक डूबे वे लोकजीवन में भी आपादमस्तक रमे हुए थे। उनका उपन्यास 'पुनर्नवा' ही नहीं, 'वाणभट्ट की आत्मकथा' और 'चारुचंद्र लेख' भी इस जीवनधारा की उपेक्षा नहीं करते। द्विवेदीजी की दायीं आँख भले ही शास्त्र पर रहती रही हो, पर बाईं तो निरंतर लोक में विचरती और रमी रही है। 'पुनर्नवा' उपंन्यास में इस पर विस्तार से सोचा और कहा गया है। ये उसीकी पंक्तियाँ हैं-

विधि-व्यवस्था संवंधी परिस्थितियाँ वदलती रही हैं, जिसे आज अधर्म समझा जा रहा है, वह किसी दिन लोक-मानस की कल्पना से उठकर व्यवहार की दुनिया में आ जाएगा। अगर निरंतर व्यवस्थाओं का संस्कार और परिमार्जन नहीं होता रहेगा, तो एक दिन व्यस्थाएं तो टूटेंगी ही, अपने साथ धर्म को भी तोड़ देंगी।' यहीं यह प्रश्न भी उठाया गया है कि 'अगर धर्म लोकमानस का नियंत्रण न कर सकें, तो उसकी सार्थकता ही क्या है?'

आगे की ये पंक्तियाँ भी हमें कम आंदोलित नहीं करती - 'सामाजिक व्यवस्थाएँ ऐसी ब्रह्मरेखा नहीं है, जो मिट ही नहीं सकती। इसलिए गुहाहित गहवरेष्ठ धर्म की रक्षा के

www.thearyasamaj.org

लिए निरंतर करते रहने की आवश्यकता होती है। इस देश के पश्चिमी क्षेत्र में निरंतर नई-नई जातियों के साथ नई-नई प्रथाएँ आती रहती हैं। उनका प्रभाव वहाँ तत्काल पड़ता है। इसलिए वहाँ के विचारशील लोग निरंतर धर्म-व्यवस्था को वर्तमान स्थिति के उपयुक्त बनाने का प्रयत न करते रहते हैं। ...

यदि निरंतर शास्त्रसम्मत व्यवस्थाओं का परीक्षण न किया जाए, तो एक दिन ऐसा आ सकता है कि सारा समाज गतिहीन होकर अपनी बनाई व्यवस्थाओं की बेड़ी में आप ही कस जाएगा।'

यहीं यह भी कहा गया है कि बाँसी को ताज़ा करना ही पुनर्नवता है। यही सहज धर्म है। न केवल जीवन, बल्कि समाज का भी।

आशय यह कि वह जो, चलते चले आ रहे से भी तार्किक स्तर पर श्रेष्ठ है, अपर होकर भी जीवनदायी है, सामर्थ्यकारी है, उसे भी चले आ रहे में आत्मसात कर पहले वाले को पहले की तुलना में कुछ और अधिक सवल और समृद्ध करना. पूछा जा सकता है कि यह जो 'अपर' है, वही क्या आधुनिक भी है? नया तो एक दिन पुराना पड़ेगा ही। जो आज आधुनिक है, कल वह भी शायद आधुनिक नहीं रहे। अंततः बचेगी वही लोकमान्य सत्ता, जिसे परंपरा कहते हैं। यानि की वह जो निरंतर स्वयं को संशोधित और संस्कारित करती चलती है, जो कहीं और कभी भी ठहरी हुई नहीं है। वह, जो निरंतर चलती रहती है और उसके इस चलने में उसका एक पाँव ज़मीन पर तो दूसरा गति में होने के कारण उठा हुआ रहता है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी तब ठीक ही कहते थे कि जो पाँव उठा हुआ है, वही तो आधुनिकता है। इस अर्थ में आधुनिकता परंपरा का अनिवार्य चरण है। ये तो परंपराविरोधी अर्थ-पद बिल्कुल ही नहीं है। विडम्बना यह कि आज इन संगतियों पर विचार न कर कुछेक अति उत्साही बौद्धिक अपनी तात्कालिकता के आवेश में तर्क-पद्धति को भी दर-किनार कर जीवन को एक बाज़ारू माल की तरह उपभोग की वस्तु समझना चाहते हैं। वे अपने बौद्धिक आलस्य के चलते उधार की अवधारणा से अपना काम चला लेना चाहते हैं। जैसे कि चौके में आटा गूँथकर ताज़ी रोटी बनाने के झंझट में न पड़ गली के नुक्कड़ से बाँसी ब्रेड उठा लाने को कहीं अधिक सुविधाप्रद मानते हैं। आधुनिकता भी उनके लिए जैसे आधुनिक उत्तर आधुनिक बजार में बिकने वाला इसी तरह का कोई बिकाउ माल हो। नेहरू ने लगभग इसी प्रक्रिया को अपनाया, जबकि गाँधी इससे कभी सहमत नहीं रहे। वे मानते थे कि परंपरा को जीवंत और गतिशील बनाये रखने के लिए झंझट में पड़ना ही होगा। अन्यथा मनुष्य और उसके पुरुषार्थ को कोई ज़रूरत ही नहीं बचेगी।

इस संदर्भ में मुझे एक बेहद परेशान कर डालने वाली मुलाकात की याद आती है। भारत को नये सिरे से खोजने और भारतीयता की पहचान को रेखांकित करने वाले शोधकर्ता और चिंतक को धर्मपाल के पास बैठा था कि प्रसंगतः भारतीय आदमी की पहचान की बात सामने आ गयी। धर्मपाल खटाखट कई बड़े ऐतिहासिक नामों को कारिज करते चले गये। इनमें नेहरू और लोहिया के नाम भी थे। नेहरू को तो उन्होंने सिरे से इंडियन माना ही नहीं। समाजवादी लोहिया को आधा माना। पूरा हिंदुस्थानी तो वे सिर्फ गाँधी को ही मानते रहे। मैंने पूछा तो कहा - गाँधी की अपनी रीढ़ थी, अपनी आँख थी, वह पश्चिम के भरोसे पर बैठने वाले व्यक्ति नहीं थे। पश्चिम की सभ्यता से टकराने और भारत की आत्मा और उसकी चेतना को बचा लेने की लड़ाई वे लड़ते रहे थे। परंपरा और आधुनिकता के बीच वे एक को निरंतर संशोधित, संस्कारित तो दूसरी को मर्यादित करने में लगे रहे। हमारे समय में वे उन ज़रूरी बिंदुओं की तलाश में ही रहे, जिनसे आधुनिक भारत की एकता के सूत्र खोजे जा सकें। वे किसी भी धर्म और जाति के विरुद्ध नहीं थे, पर धर्मों और जातियों के बीच की उन अभिन्नताओं को रेखांकित करने में लगे थे, जिससे देश बी बचा रहे और राष्ट्र भी। आज इस पूंजीवादी विकास में तो देश का बचना कम ही संभव दिख रहा है। रष्ट्र बचे, तो बचे। पर देश की कीमत पर राष्ट्र के बचने का तब क्या अर्थ रह जाता है?

इस संदर्भ में वनवासियों, आदिवासियों, खेतीहर किसानों और ग्रामीण कारीगरों और शिल्पियों का रोज़-रोज़ होता जाता विनाश क्या देश का विनाश नहीं है? क्या नदियों का गंदे नालों में तब्दील होकर नष्ट होते जाना हमारी आधुनिकता का सौंदर्य है? क्या अब भी जबकि उत्तराखंड में हम एक खंड प्रलय देख चुके हैं, यह सोचने की ज़रूरत ही नहीं है कि सारा विकास अधिकांश लोगों के विनाश की कीमत पर नहीं किया जा सकता? बची-खुची प्रकृति की कीमत पर तो एकदम नहीं। क्या हमारी परंपरा इसमें कोई मदद कर सकती है? क्या वह कोई दिशा-निर्देश दे सकती है? यदि दे सकती है, तो उससे मदद लेने की ज़रूरत और कोशिश पुनर्नवता कही जाएगी अथवा नही?

आज कई लोग आधुनिकता के नाम पर जो समझ और कह रहे हैं, क्या वह तार्किक है? क्या वे सचमुच आधुनिक है? सवाल यह भी कि क्या कोई कोरम-कोर आधुनिक हो सकता है? आधुनिकता का अर्थ क्या स्मृतिहीनता से लगाया जा सकता है? अगर नहीं, तो फिर पारम्परिक जातीय स्मृतियों और किसी देश पर उसके चेतन पर यहाँ तक कि अवचेतन पर पड़े हुए उनके प्रभावों का हम क्या करना चाहेंगे? आधुनिकता से इनका क्या संबंध जुड़ेगा?

हमारे सांस्कृतिक अवचेतन और उसकी स्मृतियों का क्या कोई योगदान हमारी विकास संबंधी अवधारणा में है? जिस वर्ण व्यवस्था और ब्राह्मणवाद को पानी पी-पीकर कोसा जाता है, क्या पूँजीवाद उत्तर-आधुनिक साम्राज्यवाद, आधुनिक जीवन और समाजों के लिए उससे कम खतरनाक है? यह नया विकास भारत के समाज में समता की वृद्धि कर रहा है यै फिर कठिन प्रकार की दुखद असमानताएँ पैदा कर चुका है? यह आधुनिकता भारत के परंपरागत समाजों के लिए कितनी उपादेय है, जो उनको विचलित करने - नये तरीकों से आर्थिक, समाजिक और सांस्कृतिक तौर पर दरिद्र बनाने में लगी हुई है? यह आधुनिकता कैसे हमारे लिए संवर्द्धनकारी और उत्थानकारी बने, कैसे हम इसे अपनी परंपरा में शामिल कर पाएँ यह आज एक बड़ा सवाल है। परंपरा और उसे धारण करने वाले देश के लिए आधुनिकता इसी तरह की एक बड़ी चुनौती है। इतनी बड़ी कि इससे निपटकर ही हम परंपरा का उपकार और आधुनिकता को उपयोगी बना पाएँगे। अन्यथा दोनों ही हमारे लिए चिंता का विषय बनकर हमारी सांस्कृतिक सेहत को बिगाड़ती रहेगी।

अन्धविश्वास के विरुद्ध आवाज़ बुलंद हो

डॉ. सुरेंद्र सिंह कादियान

सूर्योदय सर्वत्र प्रकाश का प्रतीक है, लेकिन भारत में एक आम भारतीय सूर्योदय होते ही एक ऐसे अंधःकार का शिकार होने लगता है कि वह दिन में ही लुटने लगता है। उसे लूटनेवाले चोर, डाकू, आतंकी, जेबकतरे आदि नहीं, बल्कि ज्योतिष का विविद टीवी चैनलों से प्रचार-प्रसार करने वाले ज्योतिषाचार्य है। इनमें लाल किताब का प्रशस्तिगान करने वाले गुरु वशिष्ठजी, देवी-देवताओं की कृपा की वर्षा कराने वाले निर्मल बाबाजी, तांत्रिक क्रियाओं से उद्धार करने वाले पराविज्ञान विशेषज्ञ गुरु सत्यानंद (डॉ. एस. के. सैनी) आशुभाई, रजत नय्यर, आचार्य विक्रमादित्य, डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली के मिशन व उनकी पुस्तकों के प्रचारक उनके पुत्र कैलाशचंद्र श्रीमाली, उत्तर भारत में शनिदेव के मंदिरों की स्थापना का श्रीगणेश कराने वाले शनिचरणानुरागी 'दाती' मदन महाराज राजस्थानी आदि दो-चार नहीं, पचासों गुरुओं के नाम गिनाये जा सकते हैं। लगभग हर तीसरे चैनल पर सुबह-सुबह कोई न कोई गुरु, ज्योतिषाचार्य, आचार्य, पंडित हमें ज्योतिष, तंत्र, मंत्र, वास्तुशास्त्र, रुद्राक्ष आदि की महिमा का बखान करता सुनाई देगा। इतना ही नहीं, फलित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, तंत्रशास्त्र की सैंकड़ों पत्रिकाओं और पुस्तकों से भारत का पुस्तक बाज़ार अटा पड़ा है। दावा किया जाता है कि संपूर्ण विश्व के समस्त असंभव, असाध्य, अपराजेय कार्यों का निर्विघ्न सम्पन्न करने की अमोघ विद्या है तंत्र। तंत्र महाविद्या के अंतर्गत छह महाकर्म आते है, जो मारन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तंभन और विद्वेशन कहलाते हैं। भारत में ज्ञान की प्राचीनतम शाखाओं में दो प्रसिद्ध शाखाएँ थी। आगम और निगम। निगम वेदों पर आधारित है, तो आगम तंत्रों पर. एक समय था, जब तंत्र ग्रंथों की कुल संख्या १४ हज़ार तक जा पहुँची थी। पौराणिकों में ही नहीं, बौद्धों और जैनों में भी तंत्र साधना का प्रचलन रहा है। वापू आसाराम, चंद्रा स्वामी जैसे सैंकड़ो गुरु ही तांत्रिक विद्या में विश्वास नहीं रखते, बल्कि अपना राजनीतिक भविष्य सुनिश्चित करने के लिए राजनेता भी इसका आश्रय लेते देखे गए हैं, जिनमें लालू प्रसाद यादव तो अग्रणी हैं। श्रीयंत्र की महिमा, तीर्थाटन की महिमा, रत्नों की महिमा, तुलसी, पीपल, बेल वृक्षों की महिमा सुनते-सुनते एक आम भारतीय कान ही पक जाते हैं। नया मकान बनने पर मकान के सामने काली हंडी रखना, छित्तर लटकाना अथवा राक्षसी मुखौटा लगाना इसलिए ज़रूरी समझा जाता है कि उस पर किसी की नज़र न लगे, जबकि जगत् प्रसिद्ध ताज महल, बिरला मंदिर, अक्षरधाम मंदिर, संसद भवन, लाल किला, जामा मस्जिद पर इनमें से एक भी नहीं लगा है, जबकि वे वर्षों से सुरक्षित चले आ रहे हैं। दुकान निर्विघ्न चलें, बरकत दें, इसलिए एक नींबू व सात हरी मिर्च की माला सप्ताह में एक दिन विशेपकर शनिवार को टांगी जाने की रीति भी खूब चल रही है, जबकि यूरोपीय देशों की दुकानें इनके बिना ही मुनाफे में चल रही हैं। यह कोई विचार नहीं करता। यहाँ तो यह हालत है कि बिल्ली रास्ता काट जाए, सामने से कोई छींक मार दें घर से निकलते वक्त ठोकर लग जाए, अथवा पति की दायीं या पत्नी की वाई आंख फड़कने लगे अथवा घर से बाहर पहले बायां पैर पड़ जाए, तो यात्रा अशुभ मान ली जाती है। अतः बुजुर्गों का परामर्श रहता है कि इस स्थिति में यात्रा कुछ देर के लिए टाल देनी चाहिए। पलित ज्योतिष ग्रंथ बतलाते हैं कि प्रत्येक वार को काल का निवास अलग-अलग दिशाओं में होता है, जैसे रविवार को उत्तर दिशा में, सोमवार को वायव्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम दिशा में, बुधवार को नैॠत्य कोण में, गुरुवार को दक्षिण दिशा में, शुक्रवार को अग्नि कोण में तथा शनिवार को पूर्व दिशा में अतः किसी शुभ कार्य के लिए इन दिनों में संबंधित दिशाओं की तरफ यात्रा नहीं करनी चाहिए। सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण को लेकर तो ज्योतिषियों द्वारा इतना हंगामा खड़ा कर दिया जाता है कि धर्मभीरू जनता किसी न किसी सरोवर, नदी व तीर्थ पर स्नान करने को वाध्य हो जाती है। इन सरोवरों, नदियों और तीर्थों की लंबी - चौड़ी पौराणिक व्याख्याएँ अलग से गढ़ी गई है। जिनका संबंध पुरानों से ही नहीं, वेदों से भी जोड़ दिया जाता है, ताकि चाहकर भी कोई इनसे पल्ला न झाड़ सके। जबकि वेदों में इतिहास, भूगोल है ही नहीं, क्योंकि वे मानव सृष्टि के साथ ही अस्तित्व में आये थे। इसी प्रकार अवतारवाद, वहुदेववाद, प्रतीकपूजा व मूर्तिपूजा की कल्पना वेदों में कर ली गई है।

इनअंधविश्वासों पर पहला कुठाराघात महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के दूरे व ग्यारहवें समुल्लास में किया था। फिर आर्य समाज के प्रचारकों ने अंधविस्वास, फलित ज्योतिष, टोना-टोटका, भूत-प्रेत, तंत्र-साधना, काला जादू के विरुद्ध जनजागरण किया। इससे स्थिति में कुछ सुधार भी आया, लेकिन जैसे ही टेली विजन का उदय हुआ, आर्य समाज की प्रचार शैली में ठहराव-सा आ गया और उस दस-दस हज़ार रुपये का शुल्क देकर बीस-बीस मिनटों के विज्ञापित प्रसारण टीवी पर आने शुरू हुए, तो बाबाओं, गुरुओं, ज्योतिषियों की पौ-बारह होने लगी, उनकी मार्किट वैल्यू बढ़ने लगी, उनका धंधा चमकने लगा, दस हज़ार खर्च करके लाखो कमाये जाने लगे। बात यहीं तक सीमित रहती, तो गनिमत थी, लेकिन इससे जो पार्श्वहानियाँ होने लगी, वे अधिक चिंता

का विषय बनने लगी। तंत्र साधना के चक्र में पशुबलि और नरबलि की दुर्घटनाएँ बढ़ने लगी, धर्म व साधना के शाश्वत-पथ को लोग छोड़ने लगे, गुरुडम को प्रोत्साहन मिलने लगा। लूटने- खसोटने, ठगने का बाज़ार गरम होने लगा, तंत्र की आड़ में अनेक बालाओं - महिलाओं की आबरू से खिलवाड़ होने लगा। इन बातों से विवश होकर ही आर्य मनीषी व हरियाना (कुरुक्षेत्र) से राज्यसभा सदस्य डॉ. रामप्रकाशजी को ध्यानाकर्षण प्रस्ताव सदन में लाकर यहमाँग करनी पड़ी कि वाग्त सरकार महाराष्ट्र सरकार की तर्ज पर अंधविश्वास के विरुद्ध कानून बनाए और भूत निकालने के नाम पर किसी को मारना-पीटना, चुड़ैल बताकर किसी महिला की हत्या करना, चमत्कार के नाम पर धोखा देने व धन कमाने, दैवी शक्ति होने का दावा करना, डराना, भूत-पिशाच का अहवान करना, कुत्ता, साँप-बिच्छू काटे का झाड़ा लगाना, कैंसर आदि का झाड़-फूंक से उपचार करने का दावा करना, गर्भवती महिलाओं के भ्रूण के लिंग परिवर्तन का दावा करना, बाँझ औरत को बच्चे का आश्वासन देकर अवैध संबंध बनाने का प्रयास करना, संतानोत्पत्ति के लिए नरबलि देना आदि अवैज्ञानिक अवधारणाओं को टीवी पर प्रचारित-प्रसारित करना, दंडनीय अपराध घोषित करें। अपने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में उन्होंने आंकड़े देकर बताया है कि धर्म के नाम पर जादू-टोना करने में फंसे अंधविश्वास में गत पाँच सालों में ८८७ लोगों की मृत्यु हो चुकी है। उन्होंने बताया है कि २००८ से २०१० के दौरान ५२८ लोगों की हत्या हुई है। इन तीन वर्षों में हरियाणा में ११२, जारखंड में १०१, उड़ीसा में ८२, आंध्र प्रदेश में ७६ मध्य प्रदेश में ५८ महाराष्ट्र में ३३, छत्तीसगढ़ में २९ , गुजरात में ९, मेघालय में ६, पश्चिम बंगाल और बिहार में ४-४, कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा, दादर, नागर हवेली में ३-३ और राजस्थान में दो लोगों की जानें गई हैं। ये वे आंकड़ें हैं, जो पुलिस रिकार्ड में दर्ज हैं। अन्यथा स्थिति इससे अधिक जटिल व भयावह है। इस शुभ प्रयास के लिए हम डॉ. रामप्रकाशजी को साधुवाद देते हैं।

अफसोस इस बात का है कि देश के जिस मीडिया को पहला दायित्व लोगों को अंध विश्वास, पाखंड, गुरुडम के विरुद्ध जागरूक करना है, वह विज्ञापनों से होने वाली आमदनी का लोभसंवरण नहीं कर पा रहा है और इस अवांछनीय कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर रहा है। इस पर तो प्रतिबंध लगाना ही चाहिए। इसके साथ-साथ उन लेखकों, प्रकाशकों, विक्रेताओं की भी प्रताड़ना, धर-पकड़ होनी चाहिए, जो तंत्र साहित्य के लेखन, प्रकाशन, वितरण में संलग्न है। प्रज्ञा तंत्र (सीपत रोड, बिलासपुर छत्तीसगढ़) साधना पथ (रानी झाँसी रोड़, नई दिल्ली), ज्योतिष दृष्टि (स्टेशन रोड, कोटा जंक्शन, राजस्थान), वास्तुकृति (चौपासनी रोड, जोधपुर), वास्तु एवं ज्योतिष (दरिबाँ कला, दिल्ली), मंत्र-तंत्र-यंत्र (कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा दिल्ली) गुरुदीक्षा (कुंडली जीटी रोड, सोनीपत) आदि कुछ ऐसी ही पत्रिकाएँ हैं, जो लाखों पाठकों को भ्रमित करती हैं, गुरुडम का शिकार बनाकर लूटती है। डायमंड बुक्स ने डॉक्टर भोजराज द्विवेदी की पचासों पुस्तकें राशी, लग्नफल,वास्तुशास्त्र, फेंगसुई, पिरामिड वमंदिर, वास्तु, अंक ज्योति, हस्तरेखा विज्ञान, मंत्र, तंत्र व यंत्रशक्ति, कालसर्प योग, शाबर मंत्र, रुद्राभिषेक आदि के संबंध में प्रकाशित कर रही है। डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली की महाकाली साधना, षोडशी त्रिपुर सुंदरी, तंत्र साधना, भुवनेश्वरी साधना, अप्सरा साधना, बगलामुखी साधना आदि बीसियों पुस्तकें उनके जोधपुर स्थित कार्यालयों में प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ. गिरीधर शर्मा लिखित संजीवनी प्रकाश, रुद्राक्ष चिकित्सा ग्रंथ, महालक्ष्मी वैदिक तंत्रम, महालक्ष्मी सिद्धी साधना, पारदेश्वर लक्ष्मी साधना, महामया सिद्धी साधना इसी कोटि के ग्रंथ हैं। इसी प्रकार के ढेरों प्रकाशन इस प्रकार का साहित्य प्रकाशित कर रहे हैं। क्या इस प्रकार के साहित्य की बाढ़ को रोक पाना संभव होगा? विशेषकर उस स्थिति में, जिसमें अंधविश्वास तथा तांत्रिकों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद करने वाले डॉक्टर नरेंद्र दाभोलकर की निर्मम हत्या कर दी जाती हो और आज तक उनके हत्यारे पकड़े नहीं जा सके हो? डॉ. नरेंद्र ने अपने इस अभियान को मुखर, प्रभावी, वर्चस्वी बनाने के लिए दर्जनभर पुस्तकें लिखी थी, राज्यभर में सैंकड़ों व्याख्यान दिये थे, निरंतर उन्हें धमकियाँ मिलती रही, जिनकी उन्होंने रत्तीभर फिक्र नहीं की। अंधश्रद्धा निर्मुलन विधेयक तैयार करने में भी उनकी अहम भूमिका रही, लेकिन छह बार विधानसभा में पहुँचने के बावजूद वे इसे पारित नहीं कर सके। उनकी हत्या होने व जनता के सक्रिय होने पर अब महाराष्ट्र सरकार अध्यादेश के ज़रिये इस विधेयक को लागू करने जा रही है, जिससे जनता का आक्रोष शांत हो। आग लगने पर कुआँ खोदने की यह प्रवृत्ति निश्चित ही प्रशंसनीय नहीं है। फिर महाराष्ट्र सरकार ही इसे लागु क्यों कर रही हैय हरियाणा सरकार पीछे क्यों है? जबकि वह अंध विश्वस में भी आंकड़ों के अनुसार नंबर एक है। डॉक्टर रामप्रकाशजी का प्रस्ताव जब तक केंद्र सरकार लागु नहीं करती, तब तक क्या हरियाणा सरकार को भी अंधविश्वास के विरुद्ध अध्यादेश नहीं लाना चाहिए?

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर कोई पहले व्यक्ति नहीं थे, जो अंधविश्वास के विरुद्ध संघर्षरत रहते हुए शहीद हुए हों। इसी रास्ते पर चलते हुए महर्षि दयानंद और उनके अनुयायायियों को बार-बार अपमानित होना पड़ा था। गाँव-देहात में तांत्रिकों, ओझाओं, अघोरियों का मुकबला करने वालों को अंधविश्वासियों ने आतंकित और दंडित किया है। विशेषतः आदिवासी क्षेत्रों में तो स्थिति भयानक रही है। शिक्षा, चिकित्सा, जागरूकता अभियान के अभाव में इन क्षेत्रों में बढ़ते अंधविश्वास की गति काफी तीव्र रही है। छोटे-मोटे रोग के उपचार के लिए ओझाओं, तांत्रिकों, झाड़-फूंक

www.thearyasamaj.org

करने वालों के यहाँ शरणागत होना उनकी विवशता भी बनी हुई है। सदियों से चले आ रहे इस अंधविश्वास को यदि जड़मूल से उखाड़ना है, तो आदुनिक चिकित्सा विज्ञान का प्रकाश इन अंधकारमय क्षेत्रों में पहुँचाना होगा। फिलहाल तो स्थिति यह है कि शैक्षिक, आर्थिक -सामाजिक रूप से उन्नत क्षेत्रों में भी यह अंधविश्वास वजाए खत्म होने के पनप रहा है। पाश्चात्य देशों तक की जनता इनमें फँसी हुई है, तो भारत की क्या वात की जाए? पश्चिम के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाला एक शिक्षित भारतीय भी फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, हस्तरेखा-विज्ञान, टोना-टोटका आदि में विश्वास रखता है। प्रो. अनिरुद्ध यादव की एक लघु पंक्तियाँ 'हमारे अंध विश्वास एवं कुरीतियाँ : एक विश्लेपण' जो कि पवित्रा प्रतिष्ठान, सेक्टर -३, अर्बन एस्टेट, रेवाड़ी (हरियाणा) से प्रकाशित हुए है, मेरे सामने है। प्रो. यादव -

'पाखंडी ज्योतिषि, हस्त व ललाट रेखा को देख भविष्य बतानेवाले, भूत-प्रेत निकालने वाले तांत्रिक रुपयों को दुगुना करने वाले, घर-गतवाड़ व फसल में आग लगाने वाले, काले धन को सफेद करने वाले, बलि चढ़ाने व चढ़वाने वाले, बुझागर आदि दुष्ट प्रवृत्ति के लोग, व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र का विनाश कर रहे हैं। अपने स्वार्थ की पूर्ति में संलग्न ये दृष्ट मायावी ठग इन बेचारे बोले-वाले गरीब व भयभीत लोगों को गुमराह एवं अदृष्य भय से भयभीत कर, अपने जाल में फँसाकर, उनका मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक शोषण करते हैं। परिणामस्वरूप उन वेचारे धर्मभीरू भोले-बाले लोगों के घर-परिवार की शांति भंग हो जाती है। इन घिनौने कृत्यों में महिलाएँ भी शामिल हैं। समाचार पत्रों में छपे समाचारों से मालूम पड़ता है कि तांत्रिक से प्रेरित अमुक दुष्ट महिला ने पुत्र प्राप्ति या दन पाने की लालसा के कारण अपने ही परिवार के बच्चों की हत्या कर उन्हें देवी के चरणों में भेंट रूप में चढ़ा दिया। तांत्रिकों का यह अति घिनौना कृत्य है। इन पाखंडी तांत्रिकों, ज्योतिपियों व हस्त-ललाट रेखा देख भविष्य बाँचने वालों आदि के तार दूर-दूर तक जुड़े हुए हैं। उदाहरणार्थ रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, व गुड़गाँव क्षेत्र के ही ये ठग, ज्योतिषि व हस्तरेखा विशेषज्ञ इस क्षेत्र के गाँवों के नगरों से भोले-भाले लोगों को अपने जाल में फँसाते हैं। इनसे मोटी फीस लेकर इन्हें अपने भाग्य का पर्चा या पत्ता निकलवाने के लिए गुड़गाँव में वड़े ठगों (पाखंडी ज्योतिपियों) के पास भेज देते हैं।

'गुड़गाँवं के ये तथाकथित ज्योतिषी आदि ठग इन बेचारे अंधविश्वासियों को राहु-केतु, शनि आदि ग्रह-उपग्रहों की टेढ़ी नज़र होने का भय दिखाकर, इनसे ५ से २० हज़ार रुपये तक ऐंठते हैं। जिसमें एक तिहाई या चौथाई बाग भेजने वाले स्थानीय ठग ज्योतिषियों का कमीशन होता है. शोचनीय है - यह लूट यह अन्धेर गर्दी । यह शोषण।

'अधिक दुख तो इस बात का है कि रेवाड़ी महेंद्र गढ़ व गुड़गाँव क्षेत्र के इन ज्योतिपियों आदि ठगों की कुल संख्या में कुछ संख्या तो राष्ट्र निर्माता स्कूल अध्यापकों व कॉलेज प्रोफेसरों की भी है। उपयुक्त क्षेत्र में ही नहीं, अपितु राष्ट्र के अन्य जिलों में भी इस प्रकार के राष्ट्र निर्माता इस घृणित कृत्य में शामिल हैं। इनके साथी उच्च पदों पर आसीन कुछ प्रबुद्ध अधिकारी व कर्मचारी भी इस निकृष्ट कृत्य संलिप्त है। इन तथाकथित राष्ट्र निर्माताओं का ऐसे घिनौने कृत्य में संलिप्त होना पूरे शिक्षण समाज को कलंकित करना है। यह राष्ट्र का दुर्भाग्य है। अतः इन धूर्तों के जाल में न फँसना ही आपका भाग्यशाली होना है।'

व्यक्ति की अदम्य लालसा ही उसे किंकर्तव्य विमूढ़ बना देती है, भले ही वह गँवार हो अथवा सुसिक्षित और इस लालसा-तृप्ति का जब उसे कोई स्व-निर्मित मार्ग नहीं सूझता, तो वह ज्योतिषियों, तांत्रिकों, अघोरियों के शरणागत होता है अथवा उनके न मिलने पर तंत्र-मंत्र-यंत्र संबंधी साहित्य का शिकार होकर उल्टी-सीधी साधनाएँ स्वयं ही करने लगता है। लालसा मनुष्य को कितना विवेकशून्य और पागल बना देती है, यह उस समाचार से जाना जा सकता है, जिसमें एक तांत्रिक के झाँसे में आकर एक डॉक्टर दंपति ने अपने छोटे बेटे की बलि वड़े बेटे के डॉक्टर वनाने की चाहत में दे दी। इसे मनुष्य की अपनी अयोग्यता, अपनी अकर्मण्यता , अपने आत्मविश्वास की कमी, अपने इष्ट व अपनी आध्यात्मिक साधना के प्रति उत्पन्न अंधविश्वास ही है कि हम दुष्ट-पाखंडियों की शरण में जाने को विवश हो जाते हैं। इन पाखंडियों की लीला, हाथ की सफाई, चमत्कारों, योगित क्रियाओं और भ्रम, धोखे, ठगी के सिवाय अन्य कुछ नहीं होती। यदि कोई व्यक्ति लोकैपना और वित्तैषणा का शिकार होकर अपने में किसी देवी-देवता के आने का दावा करता है, हवा में उड़कर दिखाता है, कई-कई दिन ज़मींदोज़ होने का चमत्कार दिखाता है, मंत्रों द्वारा शून्य से रुपये गिराता है, अपनी हृदयगति व नब्ज को रोक लेता है, रूहों को बुलाने व उनके बात कराने की बात कहता है, नज़र न लगने के लिए ताबीज़, डोरा, धागा या कोडियाँ देता है, भूत-प्रेतों से छुटकारा दिलाने का ढाढस बंधाता है, रुके काम सिद्ध होने की गारंटी देता है, तो समझ लेना चाहिए कि वह पाखंडी, ढोंगी, मक्कार, ठग व लुटेरा है। हाँ, यदि कोई योगात्मा सिद्ध पुरुष, ईश भक्त बिना किसी लोभ-लालच के परोपकारिता का पथ प्रशस्त करते हुए कोई चमत्कारी अनुभूति हमें कराता है, विपत्ती से हमें मुक्ति दिलाने का कोई सच्चा मार्ग दिखाता है, तो हमें उसके प्रति अवश्य ही कृतघ्न होना चाहिए। अध्यात्मि शक्तियों को व्यवसाय, धंधे, रोज़गार का सम्वल बनाना पाप है, निंदनीय कर्म है और ऐसा करने वालों की भर्त्सना ही होनी चाहिए। ऐसे पापात्माओं के जाल में फँसा व्यक्ति फिर उवर नहीं पाता

(क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

आचार्य ज्ञानेश्वरजी का पत्र

समादरणीय श्रीयुत...

सादर नमस्ते

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु ।

एक मास तक कनाडा में प्रचार यात्रा करके अगस्त २६ को इंग्लैण्ड पहुँचा। यहाँ पर भी लन्दन, लैस्टर, नौटिंगघम, ब्रिस्टल, बर्मिंघम, ग्रेट यार, माउथ, ग्रांथम आदि नगरों के समाजों, मंदिरों, रा. स्व. संस्थानों में प्रवचन, यज्ञ, शंका समाधान आदि कार्यक्रम चल रहे हैं। शेष समय में लेखन कार्य चलता रहता है। सितंबर ३० को वापस लौटने का निश्चय किया है।

विगत १२-१३ वर्षों में विश्व के पूर्वीय तथा पाश्चात्य महाद्वीपों के दर्जनों देशों की यात्रा की और इनके इतिहास, संस्कृति सभ्यता आचार-विचार तथा परम्पराओं एवं वर्तमान स्थितियों को प्रत्यक्ष देखने, सुनने व पढ़ने का सुअवसर मिला और ज्ञान की वृद्धि हुई। इतना भ्रमण करने के पश्चात एक तथ्य सर्वत्र दृष्टिगोचर हुआ कि व्यक्ति हो या परिवार, समाज हो या राष्ट्र, जहाँ आगे बढ़ने, ऊँचा उठने सामर्थ्यवान बनने व शक्ति सम्पन्न होने, संगठित रहने व अनुशासन का पालन करने, त्याग तपस्यायुक्त पुरुषार्थ करने की प्रबल इच्छा है, वहाँ उन्नति प्रगति होती रहती है। इसके विपरीत जहाँ इन गुणों के विपरीत निराशा, आलस्य, प्रमाद, लापरवाही, निर्बलता, विगठन, स्वच्छन्दता, भोग, स्वार्थ, अभिमान, द्वेश आदि अवगुण विद्यमान होते हैं, विकास, उन्नति, अवरुद्ध हो जाती है। कालान्तर में अवनति तथा विनाश हो जाता है। विश्व इतिहास की पुस्तकों का अवलोकन करें, तो स्पष्ट ही इस बात का बोध हो जाता है कि एक समय कौरव, पांडव, बौद्ध, मौर्य, विक्रमादित्य मुगल, अंग्रेज तथा पारसी यहूदी, रोमन, मिश्र, सुमेर, शक, हुण आदि साम्राज्यों का विश्व में वर्चस्व था। वे अपनी कला-कौशल, शिल्प, शक्ति, सम्पदा, समर्थ्य के कारण छाये हुए थे। किन्तु वे ही जब विलासी, अभिमानी, स्वेच्छाचारी, ईर्ष्यालु, विघटित हो गये, तो उनकी शत्रुओं, प्रतिद्वंद्वियों को परास्त करने की शक्ति क्षीण हो गई और वे संगठित विरोधियों द्वारा नष्ट कर दिये गये या पराधीन बना लिये गये। यह नियम शाश्वत है तथा सर्वत्र लागु होता है।

आर्यावर्त में विक्रमादित्य के उत्तरवर्ती काल में एक हज़ार वर्ष तक पाश्चात्य क्रूर, हिंसक, अन्यायी, अत्याचारी, घोर पक्षपाती, छद्मी, चतुर, चालाक शासकों से पराधीन प्रताड़ित, शोषित, दण्डित, भारतीयों के मन में हीनता की मानसिकता बन गई है और अज्ञान, अभाव, अन्याय से युक्त परिस्थितियों के दास बनकर भाग्य के भरोसे जीवन को घसीटने पर मजबूर हो गये हैं। संयोगवश स्वंतंत्रता मिली किन्तु प्रशासन के अनुभव से रहित पक्षपाती, स्वार्थी, सत्तालोभी तिकड़मबाज़, झूठ, छल-कपट का प्रयोग करने वाले आत्मबल से रहित अधार्मिक ,नास्तिक सत्ताधीशों से राष्ट्र का जो विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सम्पत्ति, चरित्र आदि गुणों से होना चाहिए था, वह अब तक नहीं हो पाया। इसे दुर्भाग्य नहीं कहना चाहिए, यह हमारे पूर्वजों के कर्मों का परिणाम तथा प्रभाव है।

उत्तम भौगोलिक स्थिति प्राकृतिक सम्पदा, आदर्श धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक परम्पराओं के होते हुए भी आज आर्यावर्त में अनेक क्षेत्रों में पिछड़ापन है। उसमें निम्न कारण मुख्य हैं, जिन्हें दूर करना चाहिए ऐसी मैं समझ पाया हूँ। अपूर्ण, अस्पष्ट विसंगत, विरोधाभासी, पक्षपात युक्त संविधान, महँगी, जटिल दीर्घसूत्री न्याय व्यवस्था क्षेत्रीय हितों वाली अनेक राजनैतिक पार्टियाँ, शिक्षा संस्थानों में त्याग, तपस्या ईस्वर विश्वास, सामाजिक राष्ट्रीय सेवा की भावना को उत्पन्न करना, अश्लील, अभद्र, अशिष्ट चलचित्रों का निर्माण, मांस भक्षण, मादक द्रव्यों का सेवन करने हेतु प्रोत सहन करना, ढोंगी, पाखंडी, धूर्त, चालाक, धर्मध्वजी बाबाओं पर प्रतिवंध न कर पाना, फलित ज्योतिष, भविष्यफल, मुहूर्त, शकुन, तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, जन्मपत्री आदि अंध विश्वासों को न रोकना,नये-नये मत, पंथ, सम्प्रदायों, गुरुडमों, देवी-देवताओं का प्रदुर्भाव होना, अयोग्यों की महत्वपूर्ण पदों पर आरक्षण द्वारा नियुक्ति, गौ आदि पसुओं का वध, विषय भोगों को प्रोत्साहित करने वाली विदेशी कंपनियों का आगमन, सह शिक्षा, प्राचीन गौरवयुक्त इतिहास का ज्ञान नहीं कराना, आंग्ल भाषा को अनिवार्यतः पढ़ाना, इत्यादि ऐसे महत्वपूर्ण विपय हैं, जिनके आधार पर शीघ्र कार्यवाही करनी चाहिए।

हे निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक कर्मों के सक्षी तथा फल प्रदाता प्रभो आपसे प्रेरणा प्राप्त करके वैदिक धर्म का पुनरुद्धार करने हेतु ऋषि दयानन्द ने समग्र विश्व में क्रांति करने हेतु आर्य समाज रूपी आंदोलन चलाया था। वह आज शिथिल हो गया है। ऊपर से नीचे तक संगठन विच्छिन्न हो गये हैं। आचार संहिता, विधि-विधान, अनुशासन का परिपालन समाप्त होता जा रहा है। सर्वत्र मतभेद, ईर्ष्या, द्वेष विवाद, झगड़े, मुकदमेबाज़ी, स्वार्थपूर्ति की प्रवृत्तियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। जनसामान्य के मनों में निराशा व्याप्त हो गई है और भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है। समाज का लाभ विश्व तक पहुँचाना था, वह व्यक्तिगत रह गया है। हे देव अब तो आप ही उद्धार करो। सद्बुद्धि, साहस, बल देकर स्वामी दयानंदजी के स्वप्न साकार करो। भगवान आर्यों को ऐसी लगन, लगा दे, वैदिक धर्म की खातिर मरना इन्हें सिखा दें। यही प्रार्थना है, इसे आप ही पूरा कर सकते हैं।

- ज्ञानेश्वरार्य

www.thearyasamaj.org

चीखें

- राजेंद्र प्रसाद आर्य

आज इस देश में धर्म का व्यापार, ज्योतिष का व्यापार, देह का व्यापार, खून का व्यापार तथा मानव अंगों की तस्करी का व्यापार तो न सिर्फ धडल्ले से चल रहा है, वल्कि चरमोत्कर्ष पर है, पर इन्हीं सब व्यापारों में एक नाम और जुड़ गया है और वह है बच्चों का व्यापार। बच्चों का व्यापार तो बाकी सभी व्यापार से भी घृणित, घातक है। क्योकि इसके द्वारा बच्चों का संपूर्ण जीवन एवं भविष्य कैद हो जाता है, किन्हीं क्रूर हाथों में बच्चे अपने हर माँ-वाप के आंखों के तारे होते हैं,जिसकी एक किलकारी से माँ-वाप अपने सभी दुःख, दर्द भूलकर थोड़ी देर के लिए आत्मविभोर हो जाते हैं। मनुष्य तो मनुष्य, पसु-पक्षियों में भी अपार स्नेह होता है। अपने बच्चे के लिए गाय और बच्चे जनने के वाद वहुत देर तक उसे चाटती रहती है, बंदरिया तो अपने मरे हुए बच्चे को भी अपने सीने से चिपकाकर कुछ दिन भाग-दौड़ करती है। चिड़िया तो अपने नवजात वच्चे की चोंच में अपनी चोंच से दाना डालकर वहुत दिनों तक उसकी परवरिश करती है। पर आज इन्हीं नन्हें-मुन्ने बच्चों को चुराकर बहुत बड़े पैमाने पर इसका व्यापार किया जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताविक आज इस देश में प्रति वर्ष करीव साठ हज़ार बच्चों को चुराकर उनका व्यापार किया जा रहा है। अकेले सिर्फ दिल्ली में ही प्रतिदिन लगभग १४ बच्चों का अपहरण किया जा रहा है।

सभी रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, मेला क्षेत्र इत्यादि जगहों पर इन बच्चा चोर गिरोह के सदस्य पूरी तरह सक्रिय रहते हैं, इनका नेटवर्क पूरे देशभर में फैला हुआ है। गलियों में पार्कों में खेल रहे बच्चे एवं स्कूल आने-जाने के रास्ते में इनकी पैनी नज़र अपने शिकार पर लगी रहती है। बस, ज़रा सी अभिभावकों की नज़र ओझल हुई कि बच्चा गायब और जिस दिन से बच्चा गायब कर दिया जाता है, उसी दिन से खत्म हो जाता है इनका रूठना, इठलाना और माँ-बाप के द्वारा इन पर उंडेला जानेवाला प्यार-दुलार और मनाने का सिलसिला और शुरू हो जाता है, इनका बिलखना, सिसकना, रोना, तड़पना लेकिन क्या फायदा। इनका जीवन पूरी तरह कैद हो जाता है। जानवरों की तरह किसी क्रूर हाथों में ये खुद ही रोते हैं और रोते-रोते कुद ही चुप होते हैं।

वे अभागे माँ-बाप, जिनके बच्चे मर जाते हैं, किसी कारणवश वे भी कुछ दिनों तक विलाप करने के बाद धीरे-धीरे सामान्य हो जाते हैं। पर वे अभागे माँ-वाप, जिनके बच्चे गायव कर दिये जाते हैं, जीवनभर तड़पते हैं, और उसकी एक झलक पाने को वे हमेशा लालयित रहते हैं और उन्हें याद कर वरबस ही उनकी आँखों से आंसू झलक जाते हैं, जो स्वतः सूख जाते हैंस, इन्हीं की आँखों में।

आखिर कौन है इन विलखते बच्चों के आंसुंओं के असली मुजरिम?

क्या सिर्फ वे ही, जो इसे अंजाम देते हैं, नहीं, सिर्फ वही नहीं, हम सभी हैं, पूरा देश है, यहाँ की पुलिस व्यवस्था, यहाँ की न्यायिक व्यवस्था और यहाँ की सरकार भी, क्योंकि सरकार अगर संवेदनशील होती, तो इस प्रकार की सिर्प एक-दो घटनाएँ काफी हैं। उसे झक-झोर देने के लिए। कहने को ते सरकार ने इसके लिए अलग से मंत्रालय खोल रखी है। महिला एवं वाल विकास मंत्रालय, लेकिन सब निष्प्रभावी है। पुलिस निष्क्रिय है और न्यायालय असहाय। क्योंकि अधिकांश बच्चों के माँ-बाप निर्धन ही होते हैं, जो यहाँ तक पहुँच ही नहीं पाते और थाने आसानी से एफआईआर दर्ज भी नहीं करते।

आखिर इन लापता किये गये बच्चों को कहाँ और किस-किस रूप में खपाया जाता है। ज़रा वो देखिए कि कितना दर्दनाक है। मानवता आज सिसक ही नहीं, बल्कि दम तोड़ रही है और हम है कि थिरक रहे हैं अपनी उपलब्धियों पर।

१) इन लापता कियो गये बच्चों को लेग खरीद लेते हैं और कुछ दिन पालने के बाद इनसे जीवन भर मजदूरी करवाते हैं। यही नहीं, इनसे घातक उद्योगों में काम भी करवाते हैं, जैसे भट्टी वाले उद्योग, पटाखे और रासायनिक हथियार बनाने वाले कारखाने में भी। अपने बच्चे को ये दुनिया की तमाम खुशियाँ देना चाहते हैं, पर दूसरे बच्चे की तमाम खुशियाँ छीन लेते हैं।

२) चोरी और जेबकतरी (पाकेट मारी) करने वाले लोग भी इसे खरीदकर कुछ आवश्यक ट्रेनिंग के बाद इनसे चोरी और जेबकतरी करवाते हैं। अगर पकड़े गये तो इसकी सज़ा उन्हें भुगतनी पड़ती है। उन्हें तो उसकी आमदनी से मतलब होता है।

३) कुछ ऐसे भी गिरोह हैं, जो भीख मंगवाते हैं। ये लोग उन्हें लंगड़े, लूले और अंधे बनाकर अपाहिज कर देते हैं। ताकि दयावश उन्हें अधिक भीख दे सके।

४) कुछ रईस लोग इन्हें खरीद लेते हैं और घरेलु नौकर का इनसे काम लेते हैं और ये अक्सर इनका यौनशोषण भी करते हैं और इन्हीं सब के लिए इनका विदेशों में निर्यात भी किया जाता है।

५) लड़कियों की कहानी तो और भी दर्दनाक है। इन्हें चुराकर बेच दिया जाता है। जिस्मफरोशी की मंडियों में जहाँ कोई कोठी की संचालिका नकली माँ और मौसी बनकर इनकी परवरिश करती है और दस वर्ष की उम्र होते ही इन्हें उतार दिया जाता है देह व्यापार की दलदल में जहाँ जीवन भर इन्हें यही करना होता है। वाल वेश्या की तो अधिक माँगें हैं, जिनमें इनकी मालकिन को अधिक आमदनी होती है। आज इस देश की हर बड़े शहर की वेश्यामंडी जगमगा रही है। इन लाखों चुराकर लायी गयी लड़कियों से।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

www.thearyasamaj.org

గోసంరక్షణావశ్యకత

- నుగ్గు జనార్ధన

పూర్వము గోసంతతి ఎక్కువగా కలిగియున్న వ్యక్తి ధనవంతుడుగా పేర్కొనబడేవాడు. గోసంపదనే నిజమైన సంపదగా ఎంచిరి. గోదానమునే నిజమైన దానముగా భావించిరి. తల్లి పురిటిలోనే చనిపోతే పసిబిడ్డకు ఆవుపాలే తల్లిపాలవలె ఉపయోగించారు. ఆవుపాలలో అన్ని పోషక తత్వములుండును. 'గావః విశ్వస్యమాతరః' ఆవులు విశ్వమానవులకు పాలిచ్చునవి కావున అవి తల్లి వంటివి. ఆవుపాలు తల్లిపాల వలె త్వరగా జీర్ణమగును. బుద్ధిని వికసింపచేయును. మన ఋషులు ఆవుపాలు త్రాగి ఫలములు భుజించిరి. వారు గొప్ప శాస్త్రములను రచించారు. వారి స్మరణశక్తి కూడ అద్భుతము. వారి స్మరణశక్తి కూడ అద్భుతముగా నుండెడిది. ఆవుపాలు శరీరములో చురుకుదనమును, సూక్ష్మతత్వమును, సత్వగుణమును కలిగించును. అమెరికా, యూరోప్ తదితర దేశాలలో ఆవులనే పెంచుతున్నారు. బర్రెలను పెంచడం లేదు.

మానవులకు కొన్ని జంతువులతో అవసరం వున్ననూ గోవర్గం అత్యవసరముయినవి. అవి లేకుండా మానవ జీవన నిర్వహణ అసంపూర్ణముగనే యుండును. భారతీయ వ్యవసాయము మరియు గోసంతతి ఈ రెండు అంశాలు పరస్పర పూరకాలు. పారవేసిన పదార్థములను ఆవులు తిన్నప్పటికీ వాటి పాలు స్వచ్ఛమైనవిగా వుంటాయి. ఆవుదాని సంతతి వినిపించే శబ్దాలతో మానవుల్లోని మానసిక వికారాలు నిర్మూలనవుతాయి. ఆవుపాలు మెదడులోని 'గ్రే' మాటర్‌ను పెంచును. ఆవుపేడతో అలికినచోట నూరు అడుగుల ధరిత్రిలోని విద్యుత్ అచటచేరి అచటకూర్చున్న వారికి శక్తి కలుగుతుంది.

ఒక తులం ఆవునెయ్యితో అగ్నిహోత్రం చేస్తే ఒకటన్ను ఆక్సిజన్ లభిస్తుంది. ఆవుపేడలో అలికిన ప్రాంతానికి రేడియేషన్ ప్రమాదము ఉండదని శాస్త్రవేత్తలు ధృవీకరించారు. అటామిక్ రేడియేషన్ నుంచి రక్షణ పొందగల సర్వాధిక శక్తి ఆవుపాలలో వుందని రష్యా శాస్త్రవేత్త శిరోవిచ్ పేర్కొన్నారు. ఆవు వెన్నెముకలో సూర్యకేతునాడి వుంటుంది. ఈ నాడి సూర్యుని ప్రకాశంలో మరింత ఇనుమడిస్తుంది. ఈ నాడి చేతన పొందిన క్షణములో ఒకవచ్చని పదార్థమును వదలుతుంది. అందువల్ల పాలు పచ్చగా వుంటాయి. విషాన్ని హరించే శక్తి వుంటుంది. ఆవుపేడలో కలరావ్యాధిలోని క్రిములను నాశనం చెయ్యగల లక్షణాలున్నాయని మద్రాసుకు చెందిన డా॥ కింగ్ తన పరిశోధనలో పేర్కొన్నారు. పశువధ శాలల వల్ల భూకంపాలు సంభవిస్తాయని రష్యాకు చెందిన పరిశోధకులు తెలియజేసారు.

దేశం యొక్క ఆదాయములో ప్రతి సంవత్సరం 6 నుంచి 7 శాతం పశుసంపద నుంచి లభిస్తుంది. 40 వేల మెగావాట్ల అశ్వశక్తి పశుసంపద నుంచి లభిస్తుంది. ప్రతి సంవత్సరం 5 కోట్ల టన్నుల పాలు లభిస్తున్నవి. భారతీయ గోసంతతిలో ఉత్తమమైన ఎద్దులు లభిస్తాయి. 70 శాతం వ్యవసాయము ఇప్పటికీ ఎద్దుల ద్వారానే జరుగుచున్నది. గోమూత్రం, పేడల నుంచి 32 రకాల ఔషధాలు తయారుచేస్తున్నారు. వీటిలో చాల వరకు మహారాష్ట్ర, రాజస్థాన్, ఉత్తరప్రదేశ్ రాష్ట్రాల గుర్తింపు పొందాయి. గోమూత్రం, పేడ, పాలు, మజ్జిగ మొ॥వాటి నుండి మందులు తయారు చేసే పరిశోధనశాలలు మహారాష్ట్రలోని నాగపూర్ వద్ద గల దేవళాపూర్‌లో భారత ప్రభుత్వం ఏర్పాటు చేసింది.

గోమూత్రంలో అనేక రసాయనాలు, పేడలో 16 రకాలు ఉపయోగకరమైన ఖనిజాలున్నాయి. గోమూత్రంలో జిల్లేడు, వేప, తులసి ఆకులు నానబెట్టి నీటితో కలిపి క్రిమిసంహారక మందులుగా ఉపయోగించవచ్చు. వేల సంవత్సరాల నుంచి పేడను ఎరువుగా ఉపయోగించడం జరుగుచున్నది. రసాయనిక ఎరువుల వల్ల భూసారం దెబ్బతిని భూములు బంజరుగా మారుచున్నవి.

మధ్యప్రదేశ్ నర్సింహాపూర్ జిల్లాలోని మెహర్‌గ్రామంలో బయోగ్యాస్ నుంచి విద్యుత్ ఉత్పత్తి అవుచున్నది. నాగపూర్ సమీపంలోని దేవళాపూర్ గోవిజ్ఞాన్ పరిశోధనా కేంద్రములో 143 రకాల వస్తువులు గోసంతతి ద్వారా తయారయినవి లభిస్తాయి. ఈ కేంద్రములో 50 కుటుంబాలకు ఉపాధి లభిస్తున్నది.

కర్నాటక, గుజరాత్, మధ్యప్రదేశ్‌లలో సహజ ఎరువుల ఆధారిత వ్యవసాయము ప్రగతి పథంలోవుంది.

ఆవుల వలన ఎన్నో ఉపయోగాలున్నాయి. మహర్షి దయానందుడు గోవు మరియు పశువుల నాశనము రాజు మరియు ప్రజల నాశనమునకు హేతువౌను. తన 'గో కరుణానిధి' అనుపుస్తకములో ఒక ఆవు తన జీవితకాలములో 24960 మందికి ఒక్కమూట తనపాల ద్వారా ఆహారాన్నివ్వగలదని తెలిపారు. ఒక తరంలో ఆవుదాని సంతతి వల్ల 475600 మందికి ఒక మూట ఆహారాన్నివ్వగలదని లెక్కలు వేసి చూపించారు. దాని మాంసంతో మాత్రం 80 మంది మాంసాహారులు ఒకపూట కడుపునింపుకో గలరని వ్రాసారు.

THE SPIRITUAL GENIUS OF SWAMI DAYANAND

Rev, Valson Thampu

I feel honoured in being called upon to address this gathering, meant to renew the reverential memories of Maharshi Dayanand and to revive the Arva Samaj movement. On this occasion t share a great conviction as well as a deep concern.

First, conviction. I am convinced that in Maharshi Dayanand we had a rare spiritual. genius who vision and mission represented an unprecedented spiritual stirring in the Indian context. t am equally convinced that reviving the splrituar essence of this movement is the imperative of the moment for those whos care for the Arya Samaj at all. The Arya Salmi, in its authentic version, is an effective antidote to the spiritual decay and directionlessness that we see around us in the farm of communalism, casteism, and religious obscurantism, all of which blacken the face of India and suffocate her true greatness.

Second. concern. My concern in this context is born out of my conviction as stated above. Sadly, the Arya Samaj, over the last century/ has drifted away from its spiritual wellsprings. It seems to have squandered its uniqueness and lost its zealous sense of mission. This unique movement appears to have been overtaken by those very forces it was meant to fight and eradicate from the spiritual geography of India. Let us consider only three pointers in this regard. The prime spiritual agenda of the movement—namely. to rid the Indian society of caste and superstition and to increase the stock of its nobility—is all but forgotten. The intellectual and cultural vitality that it awakened in our society seems to be no longer the forte of the movement. Several of the outstanding Hindu leaders and thinkers that I come across are, sadly, ex-Araya Samajis. The Samaj did a great service to our country in the past by catalyzing an intellectual and spiritual effervescence in the stagnant pool of Indian religiosity. One wonders if this is still the case.

The third is even more important than the first two, and might well be the source of both. And that is the noticeable escapist character that seems to have enslaved the Arya Samaj movement at the present time. To see this state of affairs in the right perspective, we need to reckon the difference between mere religiosity and true spirituality. Religiosity, at all times/ is vulnerable to escapism. It is driven, by and large, by sanctified selfishness that remains over-eager to keep God well-humoured with the twin intension of maximizing divine favour and minimizing divine displeasure. Such religiosity is essentially mercenary and transactional, driven by calculations of profit and loss. It is not marked by an eagerness to engage the world of realities in order to make spiritual values prevail in society. Spirituality is the exact opposite of this. It is an engagement with the realities of the given context, shaped by something higher than personal or mercenary interests. That is why universal values like love, compassion, truth and justice are basic to spirituality, whereas in the context of mere religiosity, we may pay only lip-service to them, if at all.

If Swami Dayanand were only one among the many religious leaders that this country produced, he would not have been a reformer and social activist. He would not have been, without a doubt, the spiritual giant he proved to be. Why do 1 consider Dayanand to be a spiritual genius? First of all, he represented the triumph of reason in religion. Contrary to popular assumption, reason is the light of true religion. Only those who are spiritually illiterate see reason and faith as opposites. They are, instead, the two horses that pull the chariot of spirituality. Faith intuits and accesses truths and insights that belong to the realm of revelation. But the harvest of revelation has to be digested in the stomach of reason. What is not reasonable should have no place in the repertoire of

www.thearyasamaj.org

religion.

If this is not insisted on. religion will regress qtiickly into blind faith, superstition and obscurantism.

Maharshi Dayanand is a role model for all those who take their religions seriously. How many young, religious men might have seen rats eating the food offered to idols at night

before Dayanand! Why did none of them have the courage or freedom of the spirit to read and pursue its meaning to its logical conclusion? Very likely, they were blinded by their orthodox religious conditioning and were disabled from thinking rationally. Spirituality gives us courage, as it did to Dayanand, to break out of the prison of blind faith and to exercise the God-given capacity for reasoning and analysis, which is the secret of our inner freedom. If this spiritual duty is not fully exercised, we shall be a party to turning religion into an instrument of exploitation rather than an agent of liberation and empowerment.

Secondly, every genuine spiritual leader has also been a religious reformer. In the sphere of religion there are two types of leaders. We are mostly familiar with religious leaders as the custodians of orthodoxy and status quo. Their agenda is to support and legitimize—overtly or covertly—the existing power structures, from which they benefit, one way or another. They don't have much use for rational thinking, and are often indifferent to k·aiues like truth, justice and compassion. They are so keen to protect, preserve and glorify the Inechanism of religion that they become blind to the meaning of religion. They mistake the

t.ᑫigiotts establishment for God. Mercifully, there is another type of leadership, even if this is rarer than the first. To them, religion is a call to know and honour God. They experience God as values: values like universal brotherhood, truth, love, compassion and justice. Their prime agenda is not to turn God into a milk cow for material gains but to exalt God as an invitation for celebrating the best of our humanity, at the individual and social levels. This makes them particularly concerned about the progressive decay in the spiritual core of their religious tradition, which happens in every religion. In its march through history, every religion suffers a gradual alienation from its spiritual core. Over a period of time, a religion becomes a contradiction of its spirituality. Maharshi Dayanand was particularly appalled by the gulf between the

Vaidic vision and popular Hinduism. So he arrived on the scene with the spiritual battle cry. 'Back to the Vedas'. Even if he had done nothing else, this initiative by itself would have established his credentials as a man with an authentic spiritual mission.

The penchant for religious reform has two contrary expressions. We must distinguish the spiritual expression from its communal counterpart. While the spiritual leader is keen to reform and revitalize his own religious tradition, his communal counterpart is keen to revile and reform all other religions. He is driven by the misconception that merely by showing all other religions down and by stigmatizing their followers, he does a great service to his own religion. Of course, a spiritual leader is not obliged to remain blind to what is rotten in other religions. which Maharshi Dayanand was not. But his concern, first and foremost, is to reform his own religion, which Dayanand did with a fierce sense of purpose.

At this point we must make a distinction that is crucial to understanding the significance of Dayanand's spiritual mission. His greatest contribution to the world of spirituality was not that reformed Hinduism. It was that he was a clarion call to reform the

idea of religion itself. It was this, and not his !-rostility to other religions, that made Dayenand criticize all of them. From an ideal standpoint, all religions fall short of their .1:piritual norms and goals. So there is a need for believers in every religion to be critically vigilant about the way their religions are understood and practised. This capacity for self-criticism proves the health and robustness of a religion.

Intolerance to responsible criticism, on the other hand, is a pointer to the decay that has set into that religion. The spiritual discipline that Dayanand has

www.thearyasamaj.org

evolved —to doubt, to debate and, if need be, to dissent— is worthy of universal acceptance. As a rule, communal elements are incapable of self criticism and, precisely for that reason, are trigger –happy in criticizing others. From a spiritual point of view, though the capacity for self criticism in what comprises the authority one has to criticize other religions as well. "First remove," Jesus said, the "beam` in your own eye; then you shall see clearly the mote in your brother's eye". Spirituality does not desist from judging others, but makes sure that judgments are based on truth and not on prejudice, ignorance and ill-will.

A third aspect of the spirituality of a true religious leader is the keenness to liberate and empower the victims of a society. To Dayanand, spirituality was an agenda of human liberation. And it is in this respect that he found caste-ridden Hinduism woefully wanting. To him there was an innate connection between idol-worship and casteism, which we shall consider presently.

Dayanand's spiritual mission was inspired by a unique conviction about the incomparable worth of every human being as a child of Go. It was this that provoked his righteous indignation against caste oppression, sati, and the destitution of Hindu widows. He realized at once that caste, which condemned millions on the basis of their birth, was the darkest blot on the Vaidic faith. To him, all human beings are equal by birth. Everyone is born a shudra and it is the right and duty of every human being to grow out of this state of spiritual under-developmeht. Though born shudrds, none of us is meant to stay in the shudra-state; we are required to evolve towards nobility. The business of religion is to help people in their pilgrimage from their shudra plight to their arya (or noble) destiny. This is the saga of spirituality and nothing that dodges or denies this fundamental human need, or spiritual thirst, should be tolerated in the sphere of religion.

Dayanad established a metaphysical connection between idol-worship and castesim. while granting full ontological autonomy and reality to matter, he asserted vigorously that even so god could not be embodied in matter or confined to its limits, wish to offer a social extension to this argument. The problem with idol-worship is, what I call, the illusion of confinement'. It creates the illusion that God's presence is confined to the sancturary or premises of a place of worship. Strangely, not many people wake up to the blatant contradiction between this and the key spiritual insight that God, being the Creator, cannot be so confined. He is omnipresent and omniscient. He encounters human beings in the boardroom, bedroom and labour room alike. The pragmatic arguments advanced in support of idol-worship apart, the net result of idol worship is a compartmentalized worldview and social order, God and all positive values are confined to places of worship and society is claimed by man arid turned into a moral jungle. it would seem, as though, we arahappy to build temples, mosques and churches, so that God can be excluded from society and we can claim the earth as our freehold. This is the connection between idol-worship and endemic social injustice.

We have the noblest of notions and ideals about human nature and destiny, but our track record has nothing to show for it. Take just one example, that of the plight of women-especially widows-in our society. In its pantheon and scripture, Hinduism idealizes women, but the social plight of women is a different thing altogether. Small wonder, Swami Dayanand emphasized the need to educate girls and to allow widows to re-marry.

It is a great pity that the crucial spiritual agenda of social liberation launched 'by Maharshi Dayanand has fallen by the way-side. Had his followers in the decades that followed remained true and faithful to this mission, we would have been living in a different and nobler society today, Over the last six decades of our nationhood. evils like raste, communalism and the oppressionof women have only increased quantitatively. Surprisingly, the Arya Samaj is barring rare exceptions like Swami Agnivesh - stand by and watch this choreography of corruption. At times, its communal fringe aids and abets the agents of obscurantism and intol-

www.thearyasamaj.org

erant fundamentalism. One gets the impression that the Araya Samaj is no longer in a liberative and transformative engagement with the Indian context. The time has come to wonder if the Arya Samaj is now a movement or if it has become, for all practical

purposes, a monument. Monument, incidentally, signifies the death of a movement. It is, at best, a mummified finger that points to a movement that was!

Beyond any doubt, the Arya Samaj movement today stands at the crossroads. From here it can sink into further irrelevance or take the path of renewal and re-engagement. Ironically, one of the practical problems of the Samaj is its material wealth. It is saddled with substantial landed property and institutional assets. This, in itself, need not be a problem. But what turns this into a virtual curse is the absence of a mission commensurate with the resources available. In this state, accumulated material resources sharpen the covetousness of those who carry the label of the movement but are spiritually alienated from it. It is this that has plunged the Samaj into self-defeating litigation and political polarization. As a rule, wealth in the absence of a clear' sense of mission, becomes an end in itself. Material resources. which are meant to serve a cause, become God. This activates limitless and predatory covetousness.

The type of leaders a movement either attracts or produces is a significant pointer to the real plight of that movement. When it is healthyand dynamic, its leaders tend to be idealistic and visionary. But when it is sick, it attracts mercenary and ruthless opportunists, utterly unscrupulous in the pursuit of their vested interests.

From this arises the second major problem that the Samaj faces: the spirit of compromise, which kills its sense of mission. Covetousness perforce breeds a spirit of compromise. It has no use for any idealistic or theological consistency. In covetousness, personal profit is the sole motivating factor and whatever serves this purpose is welcome. It is this that explains the proximity of a section of Arya Samjis to the Sangh Parivar, which became explicit during the tenure of the BJP-led NDA.Compromise of this kind is poison to the spirit of a movement. Unless it is contained and eradicated, it leads to the sure death of that movement. The Samaj now stands in urgent need to shake off the shackles of compromise and to assume the wings of commitment. Commitment was the magic of the Maharshi's personality and charisma. Often. while attending the public functions of the Arya Samaj I get the feeling that it is not heading anywhere in particular. Functions showcase the importance of leaders and an endless ritual of garlanding the big-wigs jostles the agenda almost out of sight!

The third problem facing the Samaj is the !oss of its spirit and original vision. The Arya Samaj is a comprehensive socia-spit vision for evolving a noble society in Ind that sense, it is not a religion but a move' that has a global relevance. And the stag now ready for it to play its rightful role a global level. But to do that, the Samaj h^g undergo a process of earnest self-evalu^g and spiritual renewal. It has to capture the of Dayanand. Dayanand shoxild not be to into an idol. He is not the goal. He was the to crying in the wilderness, calling the peop renewal and regeneration. He was not be) the limitations of his times. But it needs 1 said to his credit that he tried to rise al them to the extent he could.

The challenge he has given to his folioi is to engage the given context trial perspective of spiritual rationality. It is to n the love, compassion, truth and justice of prevail within the sinews and tissues of collective existence and to bring all fora oppression and exploitation, especially tl practised under the alibi of religion, to an ei

Maharshi Dayanand is a unive invitation to turn religion into an instrumer liberation and social uplift. He mandate ruthless war on the forces of oppression the agents of obscurantism that legitli oppression. The Arya Samaj is a mover mandated to celebrate the nobility of human species. based on an enlightened in God as the source of all reality and guiding light of true humanity. Its relevance to our national scenario is a glaring reality. How far its present0day custodians realize this and have the courage to address this, only time will tell.

Principal, St. Setephen's college, Delhi.

www.thearyasamaj.org

(पृष्ठ ५ का शेष)

निज़ाम सरकार तथा पुलिस के जुल्म, रज़ाकारों के अमानवीय अत्याचारों और कासिम रजवी के विशैले भाषणों के विरुद्ध सत्याग्रहियों ने कमर कस ली थी। उन्होंने अपने भाई बन्दों की बेबसी तथा अनादर देखा, किंतु वह अपने मार्ग पर डटे रहे, अपने धर्म क्षेत्र तथा कर्मभूमि को कभी न त्यागा निरन्तर आग्रह और अनुरोध करने पर भी निज़ाम सरकार ने जब आर्य समाज की गतिविधियों व धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप करना बंद नहीं किया और समाज की मांग को मानने से सर्वथा उपेक्षा की तो विवश होकर आर्यसमाज को सत्याग्रह का मार्ग अपनाना पड़ा। सत्याग्रह आरम्भ करने से पूर्व राज्य सरकार की सेवा में १४ मांगे प्रस्तुत की गई-जैसे पाठशालाओं पर रोक लगाने वाले आदेश की समाप्ति, धार्मिक त्यौहारों पर प्रतिबंध वापिस लेने की मांग, आर्यसमाजी समाचारपत्रों के प्रकाशन पर रोक न लगाना, हवन कुंडों की अनुमति, तथा राजकीय सेवा में आर्य समाज पर जुल्म आदि।

हैदराबाद में स्थानीय सत्याग्रह २९ अक्टूबर १९३८ को आरंभ हुआ जिसे आर्य रक्षा समिति ने शुरू किया था। प्रथम सत्याग्रह जत्थे के नेता श्री पं. देवीलालजी थे। उनके नेतृत्व में सर्व श्री मुन्नालाल जी मिश्र, मदनमोहनजी, एन.देवैया जी, सदाशिव रावजी एवं राजैया जी ने सत्याग्रह में भाग लिया। देखते ही देखते राज्य के विभिन्न स्थानों पर सत्याग्रह आग की तरह फैल गया और कुल मिला कर सात सौ सत्याग्रही राज्यभर में सत्याग्रह कर कारावास को अपना आवास वना चुके थे। इसी संदर्भ में अव प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी ने जनता से सत्याग्रह के बारे में मत लेने के लिए शोलापुर आर्य-सम्मेलन आयोजित किया गया, जो २३-१२-१९३८ को संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में १३ प्रस्ताव पारित किए गए, जिसमें राज्य सरकार से कई मांगे की गई। इसी सम्मेलन में घोषणा की गई कि हैदराबाद में आर्यसमाज की वर्तमान लड़ाई न तो राजनैतिक है औेर न साम्प्रदायिक अपितु वह केवल नागरिकों की धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति तक ही सीमित है। आर्य सम्मेलन के इस निर्णय के साथ समस्त भारत के कोने-कोने से हैदराबाद को सत्याग्रहियों के जत्थे भेजने की तैयारियां आरंभ होने लगी और देश के कोने-कोने में उत्साह की लहरें उमड़ने लगी। निज़ाम सरकार यदि चाहती तो वह आर्यसमाज की शिकायतों पर विचार कर सकती थी, किंतु यह दुर्भाग्य तथा खेद की बात है कि सरकार ने अपने घमंड तथा हठधर्मी के कारण मांगों को अस्वीकार कर दिया। इस निर्णय से निराश होकर आर्य समाज ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए बड़े स्तर पर सत्याग्रह का संकल्प लिया।

संपर्क : ९२४७२५००३७

(पृष्ठ ६ का शेष)

यह भी उसकी चालाकी थी। जिसे शिवाजी ने नाकाम कर दिया और अफज़ल खाँ के चंगुल से निकल गया। एक बार शिवाजी औरंगजेब की पकड़ में आ गया

और उसे जेल में डाल दिया, परप शिवाजी जेल से ऐसी चतुरता से निकल गये कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवाजी ने अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुंदर ढंग से राज्य चलाया, जो भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

४) लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल - सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते हैं। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने खंडित भारत को संगठित करके महाभारत वनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने ५६२ रियासतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृठ निश्चय अपरिमित साहस, संगठनशक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसा दृढ़विश्वासी व्यक्ति था, जिसने जो काम करना ठान लिया, उसे पूरा करके ही रहा। अंग्रेजों ने १५ अगस्त १९४७ को आज़ादी तो ज़रूर दी, परंतु वह अधूरी आज़ादी थी। उसी अधूरी आज़ादी को पूर्ण आज़ादी में परिवेष्टित करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अंग्रेज़ जब भारत छोड़कर गये थे, तब भारत में ५६२ देशी रियासतें व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतंत्र छोड़कर गये थे। सभी रियासतें चाहें, तो भारत में मिलें या चाहें पाकिस्तान में मिलें, या स्वतंत्र रहें । सब छूट देकर गये थे। वे तो यही उम्मीद रखकर गये थे कि ५६२ रियासतों व राजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई-झगड़ा चलता रहेगा, जिससे देश में अशांति बनी रहेगी। अंतमें हम ही आकर राज्य संभालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेलजी ने इती होशियारी व चातुर्य से सव राजाओं को समझाकर, डराकर या किसीसे युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आनाकानी की थी, परंतु उनको भी समझा-बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशहा नहीं संघराज्य में नहीं मिलना चाहता था। उसको भी सेना भेजकर चार घंटों में ही वारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या रह गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई की, तव वहाँ के राजा हरिसिंह ने दिल्ली आकर पटेलजी से संधि कर ली, तब पटेलजी ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दोतिहाई हिस्सा कश्मीर का जीत भी लिया, तभी नेहरूजी ने बीच में टाँग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या को जहाँ की तहाँ रखकर केस को यूएनओ (संयुक्त राष्ट्र संघ) में दे दिया, जिससे आज बी कश्मीर का एक तिहाई हिस्सा सिरदर्द बना हुआ है। यदि नेहरूजी टाँग नहीं लगाते, तो कश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज बारत विस्व के मज़बूत और सदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आँख दिखा रहा है। यदि कश्मीर समस्या हल हो जाती, तो चीन और अमेरिका भी हमें आँख नहीं दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में खड़ा हुआ दिखता और हम सबी भारतवासी सुख और आनंद की नींद सोते।

www.thearyasamaj.org

(पृष्ठ १३ का शेष)

आज अगर सच्चाई से सर्वे किया जाए, तो बहुत ही कम लड़कियाँ ऐसी मिलेंगी, जो स्वेच्छा से इस काम को कर रही हैं, नहीं तो शेष सभी लड़कियाँ बलपूर्वक धकेली गई हैं। इस जिस्मफरोशी के धंधे में अगर कुछ वर्षों के बाद खोई लड़कियाँ मिल भी जाएं, तो उसे पहचान पाना मुश्किल है। इसी से संबंधित एक दिल दहला देने वाली घटना हमने सुननी है, जो इस प्रकार है।

एक बार वेश्यागमन के उद्देश्य से एक व्यक्ति एक वेश्यालय में पहुँच गया। संचालिका से मोलग-बाव तय होने के बाद उसे एक लड़की परोसी गई। लड़की के साथ संभोगरत होने के बाद उस व्यक्ति के बहुत कुरेदने पर लड़की उसे अपनी आपबीती सुनाने को तैयार हुई। चूँकि गायब किये जाने के समय लड़की कुछ वयस्क थी, इसलिए उसे सब कुछ ठीक-ठीक याद था। लड़की ने उस व्यक्ति को अपना नाम, पता, पिता का नाम तथा परिवार के सभी सदस्यों का हुलिया सब ठीक-टाक बता दिया। उसने उसे यह भी बताया कि कैसे उसे इसके लिए तैयार नहीं होने पर कई-कई दिनों तक भूखे रखकर भयंकर यातनाएँ दी गई। जिससे अंततः वह टूट गई और तभी से वह यह घिनौना काम कर रही है।

लड़की से इतना सब सुनने के बाद वह व्यक्ति रोने लगा, रोते-रोते लड़की को बताया कि वह खुद ही लड़की का अभागा बाप। जिसे आज से दस वर्ष पूर्व किसी ने उसे मेले से गायब कर दिया था, उस व्यक्ति को रोते देखकर लड़की से भी नहीं रहा गया और वह भी फफक-फफक कर रोने लगी। पिता-पुत्री का मिलन भी हुआ, तो इस प्रकार। उस व्यक्ति ने लड़की को अपने साथ घर ले जाने को बहुत जिद की, पर लड़की उसके लिए राज़ी नहीं हुई और बोली अब बहुत देर हो चुकी है, और अब तो यही ज़िंदगी उसकीनियति बन चुकी है। वह व्यक्ति निराश होकर लौट गया और अपने घर जाकर कुछ बात छुपाकर उसने परिवार से बेटी की मिलने की बात बता गया, उसने परिवार को यह बी बताया कि अब वह नाच-गान कर रही है। लेकिन अपने परिवार वालों के अत्याधिक ज़ोर देने पर वह कुछ आदमियों को साथ ले उसी कोठे पर जा पहुँचा, उसे घर से जाने पर वहाँ उस मालूम हुआ कि लड़की को उसके दूसरे ही दिन, जब पहली बार यहाँ आया था, जहर खाकर मर गई। दरसल अपनेजन्मदाता पिता, जिसकी गोद में उसका बचपन बीता था, उसके साथ संभोगरत होने की ग्लानि को वह बर्दाश्त नहीं कर पायी और ज़हर खाकर हमेशा के लिए उस घिनौने काम से छुटकारा पा लिया। बड़े होने पर तो बच्चों को सुख-दुख भोगना तो अलग बात है, पर समाज को इन बिलखते बच्चों के आँसुओं पर तो गंभीर होना ही पड़ेगा पर हम तब तक इस विषय पर गंभीर नहीं हो सकते, जब तक यह सिर्फ दूसरों के साथ घटित होता है, अपने साथ नहीं। असल में हम जानवरों की चीखें सुनते-सुनते इतने बहरे हो चुके हैं कि अब हमें बच्चों की चीखें भी सुनाई नहीं पड़ती। आज अपहृत बच्चे अपने दोनों छोटे हाथ उठाकर हम सभी से उसका बचपन बचा लेने की गुहार लगा रहे हैं। कृपया उसे बचा लें।

గోవధ వలన వ్యాధులదికమైనవని బుద్ధుడు తన శిష్యులకు చెప్పినట్లు సూత్రని పాతమున కలదు. గోవధ ఆరంభమైనప్పటి నుండియే అతిసారవ్యాధి వృద్ధియగు చున్నదని, విరేచనకర వ్యాధులధికయగుచున్నవని చరక సంహిత చికిత్స స్థానము 10వ అధ్యాయములో 'గవా మాలమ్మ: ప్రావర్తిత: ఏవం అతిసార: పూర్వ ఉత్పన్న: ' అని చరకాచార్యులు తెలిపారు.

వేదములలో ఆవు 'అఘ్న్యా' అని పేర్కొనబడినది. అనగా చంపతగనిది అని అర్థము ఋగ్వేదము మొదటి మండలము 164వ సూక్తము 27వ మంత్రము' అఘ్న్యే యుసా వర్ధతాం మహాతే సౌభగాయ' అని వున్నది. అనగా ఈ ఆవు చంపగతనిది. నుందర ఐశ్వర్యము కొఱకు వర్ధిల్లవలెను. అని అర్థము. 'నిరపరాధ తల్లివంటి ఆవును వధింపకుము' అని ఋగ్వేదము 8వ మండలము 101వ సూక్తము 15వ మంత్రము చెప్పచున్నది. అథర్వవేదము 8వ కాండము 3వ సూక్తము 15వ మంత్రము ఆవు తదితర ప్రాణులను పీడించు హింసించు వారి తలలను రాజ్యాధ్యక్షుడు నరికించవలెనని తెలుపుచున్నది.

జైనుల ఆగమాలలో ఆవుస్వర్గంలో వుండదగినదని, దానిని చంపతగదని వున్నది. ఆవు శరీరంలో 33 కోట్ల దేవతలు నివశిస్తూ వుంటారని మన పూర్వీకుల విశ్వాసం. ఆవును పూజించి నందువలన దేవతలనందరిని పూజించిన ఫలం దక్కుతుందంటారు.

మహమ్మదీయుడైన సామ్రాట్ అక్బర్ తన రాజ్యమున క్రీ.శ.1586వ సంవత్సరములో అప్పటి మౌల్వీలతో సంప్రదించి గోహత్యానివారణ చట్టము చేసినాడు. ఇది యిప్పటికి గ్వాలియర్ సంస్థానమునందు సురక్షితముగా నున్నది. దేవతల పేరిట కొందరు, యజ్ఞయాగాదులకని కొందరు, ఆహారార్థం మరికొందరు పశుపక్ష్యాదులను వధించు చున్నారు. వధకు కారణమవుచున్నారు. పశుబలి వలన దేవీ దేవతలు ప్రసన్నులగుదురనుట అవివేకముని పరాశరముని తనపరాశరస్మృతిలో వ్రాసారు. "యస్తు ప్రాణివధం కృత్వాదేవాన్ పతౄంశ్చ తర్పయేత్, సమూఢ: చందనం దగ్ధ్వా కుర్యాదం గాలలేపనమ్" అనగా ఏ మూఢుడు ప్రాణులను వధించి బలియొనగి దేవతలను తృప్తిపరచునో అతడు గంధం చెక్కలను కాల్చి అగ్నితో శరీరానికి లేపనమొనర్చుకొని శాంతిని పొందు మూర్ఖుని వంటివాడు. గంధం వలన శాంతి లభిస్తుంది కాని గంధం చెక్కలను కాల్చి అగ్నిపూసుకున్న శాంతిలభించదు.

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707, ఫ్యాక్స్:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

वैदिक आश्रम बेगमपेट में प्रौद्योगिक प्रशिक्षण फिर शुरू

आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश की ओर से हैदराबाद शहर के बेगमपेट में संचालित वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल में प्रौद्योदिक प्रशिक्षण कक्षाओं की फिर से शुरुआत की गई।

कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री डेवलेपमेंट काउंसिल (सी.आई.डी.सी.) के सहयोग से संचालित इन कक्षाओं में ग्रामीण इलाकों से आने वाले लडकों को बिजली संबंधी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इन कक्षाओं का शुभारंभ (सी.आई.डी.सी.) निदेशक के.एन. प्रसाद की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश की ओर से (सी.आई.डी.सी.) के अधिकारियों का सभा के प्रधान विठ्ठलरावजी आर्य ने स्वागत किया. इस अवसर पर संबोधित करते हुए अतिथियों ने इन कक्षाओं को ग्रामीण इलाकों से आने वाले लड़कों के लिए लाभदाक बताया।

आयोजित कार्यक्रम में (सी.आई.डी.सी.) के अतिरिक्त मुरली सागर भी उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय सार्क भाषा-साहित्य सम्मेलन में डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी सम्मानित

सिक्किम की राजधानी गंगटोक में २७ से २९ अक्तूबर तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सार्क भाषा सम्मेलन में डॉ. सी.एच. चन्द्रय्याजी को सम्मानित किया गया। आयोजित सम्मेलन में डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या ने भाग लेकर राजभाषा या राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर भाषण दिया। साथ ही उन्होंने अपनी विभिन्न रचनाओं के साथ एक प्रपत्र भी पेश किया।

इस पर सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. स्वदेश भारती तथा मुख्य अतिथि के हाथों उन्हें श्रेष्ठ साहित्यकार की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी सभा के उपमंत्री तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि होने के नाते सभा की ओर से प्रधान तथा अन्य पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी है।

सिक्किम में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सार्क भाषा साहित्य सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री डॉ. सी.एच. चंद्रय्या को साहित्यकार पुरस्कार से सम्मानित करते हुए सम्मेलन के

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

कलांजली प्रैस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया। प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र. सु. बाज़ार, हैदराबाद